हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जनवरी, 2012 वर्ष 10 अंक 11

शुक्रे रब करता रहे

आख़िर नबी को मान कर
ख़ालिक़ को तू पहचान ले
उसकी मर्ज़ीयात को
आख़िर नबी से जान ले
काम याँ कोई न कर
तू उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ
है यही लाज़िम तुझे
तू इस को दिल से मान ले
खाना, कपड़ा, रहना, जोड़ा
रब से अपने माँग कर
शुक्रे रब करता रहे
और रब से तू इनआम ले

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यू.एस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Desining & Editing by : Qamaruzzan.a. +91 94522 95052, +91 727527805

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
समस्या भारी जहेज़ की	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	7
दअवते इस्लामी	मौ0 सै0 वाजेह रशीद हसनी नदवी	11
किस्सा आदम के दो बेटों का	बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी	15
बेहयाई का सैलाब	मौलाना मुहम्मद सानी हसनी	17
हज़रत ज़ैनब रज़ि0	तालिब हाशमी	18
इद्दत और सोग के आदेश	मुफ्ती राशिद हुसैन नदवी	21
हज़रत नाज़िम साहब नदवतुल उलमा		23
बच्चों की तअलीम व तर्बियत	मौ0 सै0 अब्दुल हयि हसनी रह0	24
नवयुवकों के लिए आश्चर्यजनक	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	26
कौम कब सुधरेगी	इदारा	28
हज के बाद हुज्जाजे किराम	मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	29
आदर्श शासक	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	30
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी	32
शरद ऋतु	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	34
वन्दे मातरम् की वास्तविकता	जीनियस ख़ान	35
पवित्र कुर्आन और मुहम्मद सल्ल0	मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	37
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूरः-ए-बक़रः

अनुवाद : और कहते हैं कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ (आवरण) है, बल्कि लानत की है अल्लाह ने उनके कुफ्र (नकार) के कारण, अतः बहुत कम ईमान (आस्था) लाते हैं[1(88)]। और जब पहुँची उनके पास किताब अल्लाह की तरफ से जो सच्चा बताती है उस किताब को जो उनके पास है, और पहले से फतह मांगते थे काफिरों पर, फिर जब पहुँचा उनको जिसको पहचान रखा था तो उससे अस्वीकारी (मुन्किर) हो गए, इसलिए लानत है अल्लाह की अस्वीकारियों (मुन्किरों) पर[2(89)]। बुरी चीज़ है वह जिसके बदले बेचा, उन्होंने अपने आपको कि मुन्किर हुए उस चीज़ के जो उतारी अल्लाह ने उस ज़िद पर कि उतारे अल्लाह अपने फज़्ल (कृपा) से जिस पर चाहे अपने बन्दों गें से[3], अतः कमा लाए गुस्से पर गुस्सा[4], और काफिरों के वास्ते अज़ाब (दण्ड) है ज़िल्लत का[5(90)]। और जब कहा जाता है उनसे कि मानो जो अल्लाह ने भेजा है तो कहते हैं कि हम मानते हैं जो उतरा है हम पर और नहीं मानते उसको जो उसके अलावा है, हालांकि वह किताब सच्ची है और पुष्टि करती उस किताब कि जो उनके पास है[6], कह दो फिर क्यों कत्ल करते रहे हो अल्लाह के सन्देष्टाओं को पहले से, यदि तुम ईमान रखते थे[7(91)]।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. यहूदी अपनी प्रसंशा में कहते थे कि हमारे दिल ग़िलाफ (आतरण) के अन्दर सुरक्षित हैं, इसलिए अपने धर्म के अतिरिक्त किसी की बात हमको प्रभावित नहीं करती। हम किसी की चापलूसी, वाकपटुता अथवा चमत्कार और धोखे के कारण उसका कदापि अनुसरण नहीं कर सकते। "अल्लाह ने कहा, वह बिल्कुल झूटे हैं बल्कि कुफ्र (नकार) के कारण अल्लाह ने उनको मलऊन (धिक्कारित) और अपनी कृपा (रहमत) से दूर कर दिया है। इसलिए कि किसी प्रकार भी सत्य धर्म (इस्लाम) को नहीं मानते और बहुत कम ईमान की दौलत से नवाज़े जाते हैं"।

2. उनके पास जो किताब आई वह कुर्आन है और जो किताब उनके पास पहले से थी वह तौरेत हुई। कुर्आन के उतरने से पहले जब यहूदी काफिरों से दब जाते अथवा परास्त होते तो अल्लाह से दुआ मांगते कि "हमको अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 और जो ग्रन्थ उन पर उतरेगा उसके आधार पर काफिरों पर वर्चस्व स्थापित करा दे"। जब हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पैदा हुए और सब निशानियाँ भी देख चुके तो मुन्किर हो गए और धिक्कारित हुए।

3. अर्थात जिस चीज़ के बदले उन्होंने अपने आपको बेचा वह कुफ्र और इन्कार है कुर्आन का, और इन्कार भी केवल ज़िद और ईर्ष्या के कारण।

शेष पृष्ठ.....20 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मय्यत के हक़ में लोगों की प्रशंसा

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के सामने एक जनाज़ा गुज़रा। लोगों ने उसकी प्रसंशा की, आप सल्ल0 ने कहा, अनिवार्य हो गई। फिर एक और जनाज़ा गुज़रा, लोगों ने उसकी बुराई की, आप सल्ल0 ने कहा, अनिवार्य हो गई। हज़रत उमर रज़ि0 ने पूछा कि क्या अनिवार्य हो गई? आप सल्ल0 ने कहा, जिसकी तुमने खूबियां बयान कीं उस पर जन्नत अनिवार्य हो गई और जिसकी बुराई की उस पर जहन्नम अनिवार्य हो गई, तुम लोग ज़मीन पर अल्लाह के गवाह हो।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अबुल अस्वद रज़ि0 कहते हैं कि मैं मदीना आया और हज़रत उमर रज़ि0 के पास आकर बैठ गया। इसी दौरान एक जनाज़ा उधर से गुज़रा और उसकी प्रसंशा की गई। हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा, अनिवार्य हो गई। फिर दूसरा जनाज़ा सामने से निकला, उसकी भी प्रसंशा की गई। हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा, अनिवार्य हो गई। फिर तीसरा जनाज़ा आया, उसकी लोगों ने बुराई की। हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा, अनिवार्य हो गई। मैंने कहा ऐ अमीरुलमुमेनीन! क्या अनिवार्य हो गई, कहा, मैंने वही कहा जो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से सुना था। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा है कि जिस मुसलमान पर चार आदमी उसकी भलाई की गवाही दें अल्लाह उसको जन्नत में दाखिल करेगा। मैंने कहा और तीन? कहा तीन भी, अर्थात तीन की गवाही का भी यही आदेश है। मैंने कहा और दो? कहा, दो भी, अर्थात दो की गवाही गानी जाएगी। फिर एक के सम्बन्ध में प्रश्न नहीं किया।

(बुखारी)

जिसकी छोटी संतान मर जाए उसका सवाब (पुण्य)

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा, जिस मुसलमान के तीन नाबालिग़ लड़के मर जाएं तो उसको अल्लाह अपनी मेहरबानी से जन्नत में दाखिल करेगा। (बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा कि जिस मुसलमान के तीन लड़के मर जाएं वह सिर्फ कसम पूरी करने के लिए आग पर गुज़रेगा।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 कहते हैं कि एक महिला ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मर्द लोग आपके प्रवचन व उपदेश सुनते रहते हैं, हमारे लिए भी एक दिन तय कर दें कि हम लोग भी निर्धारित समय पर उपस्थित हुआ करें, और आप हमको वह इल्म (ज्ञान) दें जो ज्ञान अल्लाह ने आपको प्रदान किया है। आप सल्ल0 ने कहा फलाँ—फलाँ दिन इकट्ठा हुआ करो। अतः नियत समय पर महिलाएं जमा हुईं। आप सल्ल0 ने उनको वही शिक्षा दी जो अल्लाह ने आपको

शेष पृष्ठ.....10 पर

समस्या भारी जहेज़ की

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

कानून बना हुआ है कि जहेज़ (जिसे हिन्दू भाई दहेज कहते हैं) देने–लेने वाला दण्डित होगा, परन्तु क्या कोई दहेज देने–लेने वाला दण्डित हुआ भी है? इस प्रश्न का उत्तर सरल नहीं है। हम देखते हैं कि इस विषय पर दण्डित होने वाले अधिकांश लोगों ने यही कहा कि मुआमला दूसरा था, जहेज़ का बहाना बना कर उन्हें फँसा दिया गया। साथ ही यह भी देखने में आता है कि समाज में शायद ही कोई शादी होगी जो बिना जहेज़ के हुई हो।

हमारे मिलने वाले एक साहब मौलवी साहब कहलाते थे, जब कि वह सिर्फ कुर्आन शरीफ नाज़िरा पढ़े हुए थे, कुछ उर्दू आती थी, मीलाद की किताबें पढ़ लेते थे और मीलाद पढ़ते थे, कुर्आन मजीद की कुछ सूरतें तरतीब से पढ़ लेते थे। बड़ी ही गरीबी की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, बीवी वाले थे, एक बेटी थी। बेटी सयानी हुई, एक जवान से रिश्ता तय हुआ, मुझसे मशवरा लिया कि क्या करूँ, मेरे पास तो इतना भी नहीं है कि दस आदमियों को दरवाज़े पर खाना खिला सकूँ। मैंने कहा फिक्र न कीजिए, लड़के से कहिए कि अपने दो साथियों के साथ आ जाए, आप मीलाद तो पढ़ते ही हैं, एक किलो बताशे मंगवा लीजिए, मीलाद पढ़िये, आखिर में खुद निकाह पढ़ा दीजिए, जो मौजूद हों खिला कर बच्ची रुख़सत कर दीजिए। मशवरा कबूल हुआ, इस गांव में सिर्फ तीन घर मुसलमानों के हैं, निकाह के वक्त दूल्हा, उसके दो साथी, गांव के पांच गुसलमान और लगभग 50 हिन्दू भाई मौजूद थे। रुख़सती के वक्त गांव के हर हिन्दू ने कोई न कोई बरतन दरवाजे पर ला रखा, लोटा, बाल्टी, गिलास पतीलियाँ, कटोरे, लगभग 60 बरतन आ गये जो सबके सब पीतल के थे। मौलवी साहब हिन्दू भाइयों की यह हमदर्दी देख कर रो पड़े। लड़की रुख़सत हुई, यह दहेज नहीं सहानुभूति का अनुपम आदर्श था। इस वाकिये को 25 वर्ष बीत चुके हैं। मौलवी साहब अब नहीं हैं परन्तु उनकी लड़की आराम से है।

नाम लेने का मुझमें साहस नहीं, अगर आप ने किसी उच्चतर पद वाले व्यक्ति के बेटे या बेटी की शादी देखी होगी तो आप स्वयं गवाही दे सकते हैं कि जहेज़ का कानून वहां मातम कर रहा है। एक प्रमाण पत्र रखने वाले मौलवी साहब ने एक गोष्ठी में धुवाँ–धार भाषण दिया कि समाज सुधार की प्रक्रियाओं में जहेज़ को प्राथमिकता देनी चाहिए, और भारी जहेज़ पर वैधानिक तथा नैतिक रोक लगनी चाहिए। एक माह के बाद उनके बेटे की शादी हुई, जिसमें दूसरे बहुमूल्य उपहारों के साथ चार पहिये की गाड़ी भी थी।

एक धनवान सज्जन ने बड़े धूम धाम से एक धार्मिक गोष्ठी की, जिसमें समाज सुधार पर धुवाँ–धार भाषण हुआ, परन्तु जब थोड़े ही दिनों पश्चात उनकी लड़की की मंगनी में लगभग 50 लोग आए, निकाह की तारीख़ रखी गई, बारात में कितने लोग आएंगे, महर क्या होगा, यह सब तय हुआ, जो बारात के रोज़ ही खुलेगा,

परन्तु मंगनी में आए हुए पचास लोगों में हर एक को एक–एक घड़ी और दो–दो सौ नक्द दिये गये, जबकि लड़के के बाप को भारी रकम प्रस्तुत की गई, जिससे लोगों ने आँक लिया कि आगे जहेज़ में क्या मिलने वाला है।

एक सज्जन बड़े ही दीनदार (धार्मिक) हैं, लड़की को पर्दे के साथ इण्टर कराया है, दीन का इल्म भी दिया है। एक दूसरे साहब वह भी बड़े दीनदार हैं। लड़का जवान हो चुका है, बीकाम है, नौकरी भी मिल चुकी है। बाप–बेटे दोनों दीनदारी और अच्छे स्वभाव के लिए प्रसिद्ध हैं। एक तीसरे दीनदार ने दोनों में रिश्ते की बात की, दोनों तरफ के लोग बहुत खुश हुए, परन्तु लड़के के बाप ने किसी प्रकार संकेत दिया कि हीरो होण्डा और उचित नक्दी के बिना शादी न हो सकेगी। चौथे दीनदार ने लड़की वाले को मशवरा दिया कि ऐसे रियाकार लोगों के यहाँ रिश्ता मत करो। लड़की वाले ने सोच कर जवाब दिया कि लड़का पढ़ा लिखा है, नौकरी भी लग चुकी है, अगर शादी हो गई तो मेरी लड़की की जिन्दगी बन जाएगी, इन्कार कर देने पर पता नहीं कैसा रिश्ता मिलता है, और कब मिलता है। अतः मैं लोन ले कर शादी कर दूँगा, आप का मशवरा तो बहुत ठीक है, मगर क्या आप की नज़र में कोई मुनासिब लड़का है? उन्होंने कहा कि मेरी नज़र में कोई मुनासिब लड़का नहीं है। अन्ततः लड़की वाले ने लड़के वाले की मांग पूरी करने का संकेत दे दिया, लड़की वाला क़र्ज़े से दब गया, मगर शादी हो गई।

यह जहेज़ तथा शादी की समस्या केवल शिक्षित सज्जन (शरीफ) वर्ग के ग़रीबों में ही है। धनवान लोग तो जहेज़ में मुक़ाबला करते हैं और एक दूसरे से बढ़ जाना चाहते हैं, उनकी लड़कियों की धूम धाम से "शादी घरों" में शादियों होती हैं, मुशकिलात (समस्याएं) केवल निर्धन, शिक्षित, सभ्य लोगों के लिए है। आज उनकी लड़कियां मुशकिलात झेल रही हैं और उनके घर के जिम्मेदारों की नींदें हराम हो रही हैं।

अशिक्षित, अनैतिक, दीन की परवाह न करने वालों की बच्चियों की शादियों में कोई कठिनाई नहीं आती। गरीब दीनदारों की यह एक प्रकार की कठिन परीक्षा है। अल्लाह उनकी मदद करेगा और जब वह अल्लाह पर भरोसा किये हुए हैं तो अल्लाह तआला उनकी अवश्य ही सहायता करेगा।

मुस्लिम समाज में आज जहेज़ की समस्या के साथ एक महत्वपूर्ण समस्या जात–पात की भी है, जिसके सुधार की ओर ध्यान देना अति आवश्यक है। यह सत्य है कि अल्लाह तआला ने फरमाया कि "हमने तुम को कबीले और परिवारों में बनाया ताकि तुम्हारी पहचान रहे" अतः कोई यदि अपने गोत्र व परिवार में शादी करता है ताकि उसकी विशेषताएं सुरक्षित रहें और पहचान बाकी रहे तो कोई हरज नहीं, लेकिन किसी दूसरे गोत्र को केवल गोत्र के कारण हीन समझना इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध है। और अगर कोई बुराइयों से बचता है और दूसरे गोत्र के लोगों से रिश्ता–नाता कर लेता है तो वह इस्लाम की दृष्टि में कदापि बुरा नहीं। अल्लाह के निकट वह उतनी ही सम्मान वाला है जितना सदाचारी है।

❖❖❖

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

—अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि0 का कुबूले इस्लामः

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि0 अपने शहर यसरिब में ही थे कि उन्होंने नबी सल्ल0 के बारे में कुछ उड़ती सी ख़बर सुनी, अपने भाई से कहा कि तुम उस वादी अर्थात मक्का में जाओ और ज़रा उन साहब का जो अपने को नबी कहते हैं और जो यह दावा करते हैं कि उनके पास आसमान से "वही" आती है, उनका कुछ पता लगाओ, उनकी बात सुनो और फिर मुझे आकर बताओ। चुनांचे वह रवाना हुए, उनके भाई अनीस खुद एक मशहूर, अच्छे शाएर और ज़बान के माहिर थे, वह नबी–ए–करीम सल्ल0 से मिले, आपकी बात सुनी, फिर भाई को जाकर बताया कि मैंने देखा कि वह बहुत पसन्दीदा व आलातरीन (उच्चकोटि) सद्व्यवहार की शिक्षा देते हैं, जो कलाम मैं सुन कर आया हूँ उसे किसी तरह भी "शेर" (पद्य) नहीं कहा जा सकता है, हज़रत अबूज़र बोले, इतनी सी बात से तो कुछ तसल्ली नहीं होती, आख़िर खुद पैदल चल कर मक्का पहुँचे।

हज़रत अबूज़र को नबी सल्ल0 की पहचान न थी और किसी से दरयाफ़्त करना भी मुनासिब न समझते थे, इसी तलाश में रात हो गई, उस वक़्त हज़रत अली कर्रमुल्लाह वजहू ने उनको देखा और उनको अन्दाज़ा हो गया कि यह कोई बाहरी आदमी और मुसाफ़िर है, अली मुर्तुज़ा ने कहा, अच्छा मेरे यहाँ चलो, यह रात को वहीं रहे, लेकिन किसी ने एक दूसरे से कुछ न पूछा, जब सुबह हुई तो वह अपना मशकीज़ा और ज़ादेराह (सफ़र खर्च) लेकर फिर उसी मस्जिद गें पड़ गए और यह दिन भी उसी तरह गुज़र गया, दिल में आंहुजूर सल्ल0 की तलाश थी, मगर किसी से दरयाफ्त न करते थे, अली मुर्तुज़ा फिर आ पहुँचे, फ़रमाया, शायद तुम्हें अपना ठिकाना नहीं मिला, अबूज़र ने हां में जवाब दिया, अली मुर्तुज़ा उन्हें फिर साथ ले गए, अब उन्होंने पूछा, तुम आख़िर हो कौन? और यहां किस लिए आए हो? उन्होंने कहा, अगर तुम मुझ से राज़दारी, हाल छुपाने और मेरी रहनुमाई का वादा करो तो बता सकता हूँ, अली मुर्तुज़ा ने वादा कर लिया, अबूज़र ने कहा, मैंने सुना है कि इस शहर में एक शख़्स है, अपने आपको अल्लाह का नबी बताता है, मैंने अपने भाई को भेजा था, वह यहां से कुछ तसल्ली बख़्श बात ले कर न गया, इसलिए मैं खुद आ गया हूँ, अली मुर्तुज़ा ने कहा, तुम खूब आए और खूब हुआ कि मुझ से मिले, देखो मैं उन्हीं की खिदमत में जा रहा हूँ, मेरे साथ चलो, मैं पहले अन्दर जा कर देख लूंगा, अगर इस वक़्त मिलना मुनासिब होगा तो मैं दीवार के साथ लगकर खड़ा हो जाऊंगा, गोया जूता ठीक कर रहा हूं।

अलग़रज़ अबूज़र अली मुर्तुज़ा के साथ ख़िदमते नबवी में पहुंचे और अर्ज़ किया कि मुझे बताया जाए कि इस्लाम क्या है? आप सल्ल0 ने इस्लाम

की बाबत बयान फ़रमाया, आप सल्ल0 की बात सुन कर वह उसी जगह मुसलमान हो गए, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया, अबूज़र! तुम अभी इस बात को छुपाए रखो और अपने वतन को चले जाओ, जब तुम्हें हमारे जुहूर (पूर्ण रूप से प्रकट होने) की ख़बर मिल जाए तब आ जाना, उन्होंने कहा, बखुदा मैं तो इन दुश्मनों में ऐलान करके जाऊँगा, अबूज़र काबे की तरफ़ आए, कुरैश जमा थे, उन्होंने सबको सुना कर बुलन्द आवाज़ से कल्म–ए–शहादत "अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अशहदुअन्न मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" पढ़ा. यह सुनकर लोगों ने उनको घेर लिया और इतना मारा की बेदम हो कर ज़मीन पर लेट गए, इतने में हज़रत अब्बास रज़ि0 आ गए, उन्होंने झुक कर देखा और कहा कमबख़्तो! यह क़बीले ग़िफ़ार से तअल्लुक़ रखते हैं, और तुम्हारे शाम के ताजिरों का रास्ता इन्हीं के क़बीले से गुज़रता है, लोग यह सुन कर हट गए, अगले दिन फिर सबको सुना कर कल्मा पढ़ा, फिर लोगों ने उन्हें मारा और हज़रत अब्बास रज़ि0 ने आकर उनकी मदद की[1]।

यसरिब वालों की आप सल्ल0 से मुलाक़ात–

आंहज़रत सल्ल0 का मामूल था कि हज के ज़माने में क़बीलों के सरदारों के पास जा कर इस्लाम की तब्लीग़ फरमाया करते थे, इस साल (रजब, 10 नबवी) में भी आप कई क़बाएल के पास तशरीफ़ ले गए, मिना की एक घाटी "अक़बा" के पास जहां अब मस्जिदे अक़बा है, क़बील–ए–ख़ज़रज़ के कुछ लोग नज़र आए, आप ने इस्लाम की दावत दी और कुर्आन मजीद की आयतें सुनाईं, यह लोग मदीने में यहूदियों के पड़ोस में रहते थे और उनसे यह सुनते थे कि क़रीबी ज़माने में कोई नबी आने वाला है, वह आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि वल्लाह! वह वही नबी मालूम होते हैं जिनकी ख़बर तुमको यहूद देते थे, देखो! यहूद इस पहल में बाज़ी न ले जाएं, यह कह कर सबने एक साथ इस्लाम कुबूल किया[2]।

पहली बैअ़ते अक़बाः

दूसरे साल जब हज का ज़माना आया तो अन्सार के 12 आदमियों ने आपके हाथ पर बैअत की और इस बात की ख्वाहिश की कि इस्लाम के अहकाम सिखाने के लिए कोई मुअल्लिम (उस्ताद) उनके साथ कर दिया जाये, आंहज़रत सल्ल0 ने हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि0 को इस ख़िदमत पर मुक़र्रर फ़रमाया, उन लोगों ने आपके मुबारक हाथों पर चोरी, ज़िना, चुग़ली, झूट, और औलाद के क़त्ल से परहेज़ करने और अच्छी बातों में इताअत करने और तौहीद पर क़ायम रहने की बैअत की[3]।

मदीने में इस्लामः

यह पहली बैअते अक़बा जो नबूवत के ग्यारहवें साल के आख़िर में हुई थी, उसी मौक़े पर हज़रत मुसअब बिन उमैर को हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने मदीना भेज दिया था, हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि0 यसरिब जाकर दीन की प्रारम्भिक बातें और इस्लाम के मसाएल से बाख़बर करने लगे, उनकी मेहनत व जांफिशानी

1. बुख़ारी शरीफ़ (बाब इस्लाग अबीज़र रज़ि0, सही मुस्लिम बाब फ़ज़ाएल अबीज़र, अनुवाद 'नबी–ए–रहमत' से, लेखक मौ0स0 अबुल हसन अली नदवी रह0।
2. सीरते इब्ने हिशाम, 1/428–429, असासीरतुन नबविया इमाम ज़हबी 1/290।
3. सीरते इब्ने हिशाम, 1/432।

से लोग इस्लाम की तरफ झुकने लगे, वह असअद बिन ज़रारह के मकान पर ठहरे थे, असअद बिन ज़रारह ईमान ला चुके थे, चुनांचे दोनों दावत का काम करने लगे, और जब चालीस की संख्या में मुसलमान हो गए तो हज़रत मुसअब ने नमाज़े जुमा शुरु कर दी, यह मदीने में पहला जुमा था और हुज़ूर सल्ल0 की हिज़रत से पहले था[1]।

असअद बिन ज़रारह के एक ख़ालाज़ाद भाई सअद बिन मआज़ और उनके एक साथी उसैद बिन हुज़ैर क़बीले औस के सरदारों में थे, दूसरी तरफ ख़ज़रज के सरदार सअ़द बिन उबादह और अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल थे, सअद बिन मआज़ को हज़रत मुसअब के कामों की ख़बर मिली तो बहुत नाराज़ हुए और उसैद बिन हुज़ैर से कहा कि मेरे ख़ालाज़ाद भाई से सख़्ती से कहो कि यह किस शख़्स को ठहरा रखा है? जो अजीब बातें करता है, मेरे माबूदों को बुरा कहता है, उस कुरैशी को अपने यहां से रवाना कर दें, चुनांचे उसैद बिन हुज़ैर आए और गुस्से के साथ असअद बिन ज़रारह से बात की, हज़रत मुसअब ने कहा 'साहब आप बात सुन लीजिये फिर फैसला कीजिए कि मैं बुरी बात करता हूं या ठीक बात करता हूँ, बुरी बात हो तो हमहो निकाल बाहर कीजिएगा' उसैद ने कहा ठीक है सुन लेता हूँ। हज़रत मुसअब ने कुर्आन पढ़ कर सुनाया और कुछ बात की, उसका इतना असर पड़ा कि उन्होंने नहा–धो कर कल्मा पढ़ा और मुसलमान हो गए और कहा कि सअ़द बिन मआज़ (हमारी क़ौम के) बड़े असर वाले आदमी हैं, अगर वह ईमान ले आते हैं तो बहुत असर पड़ेगा, मैं उनको भेजता हूँ, चुनांचे उसैद बिन हुज़ैर सअद बिन मआ़ज़ के पास गए कि उनको भी सुनने के लिए भेजें, अगरचे सअ़द बिन मआ़ज़ को मुसअब बिन उमैर के पास भेजना आसान काम न था, लिहाज़ा उसैद ने यह तरकीब की कि सअ़द बिन मआ़ज़ के पास पहुंचे और अपनी बात तो बताई नहीं कि क्या करके आए हैं बल्कि यह कहा कि ख़ानदान बनी हारिसः के लोग जो तुम्हारे ख़ानदान के मुख़ालिफ़ हैं, वह तुम्हारे ख़ालाज़ाद भाई असअद बिन ज़रारह को मारने के लिए जा रहे हैं, यह सुनते ही सअद बिन मआज़ को ख़ानदानी रिश्ते का जोश आ गया और कुछ पूछे बग़ैर लपके कि देखें क्या है, और असअद बिन ज़रारह की मदद करें, वहां मुसअब बिन उमैर मिले, सअ़द बिन मआज़ इस बात पर अपने भाई पर बरस पड़े, लेकिन दोनों ने उनको समझा–बुझा कर ठन्डा किया और कहा कि बात तो सुन लीजिए फिर जो चाहिए कीजिएगा, उन्होंने कहा 'अच्छा बताओ, चुनांचे मुसअब ने कुर्आन मजीद की आयतें सुनाईं और दीन की तशरीह (व्याख्या) की, जो सअ़द बिन मआज़ के भी दिल में उतर गई और वह मुसलमान हो कर वापस लौटे और पूरे अपने ख़ानदान "बनू अब्दुल अशहल" को जमा करके और अपने तअल्लुक़ का हवाला देकर बताया कि मैं मुसलमान हो गया हूँ और अब तुम सबको भी होना है, इसका असर यह पड़ा कि बनू अब्दुल अशहल का पूरा ख़ानदान मुसलमान, हो गया, इसी तरह कुछ न कुछ होता रहा, यहां तक कि एक साल के अन्दर मदीना इस्लामी शहर बन गया।

जब मुसमलानों की तादाद क़ाबिले इत्मिनान हद तक हो

1. सीरते इब्ने हिशाम, 1/435।

गई तो उन लोगों ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से कहा कि अब आप मक्का से हिज़रत फ़रमा कर यसरिब आ जाएं, और उसको अपनी दावत व तब्लीग़ का मरकज़ बनाएं, आप सल्ल0 के चचा हज़रत अब्बास भी उस वक़्त इस्लाम नहीं लाए थे, उस मौक़े पर हाज़िरे ख़िदमत थे, उन्होंने अन्सार से यह बात सुन कर उनसे खिताब करके कहा कि ऐ ख़ज़रज के लोगो! अगर तुम मुहम्मद सल्ल0 और उनके साथियों का हमेशा दुश्मनों के मुक़ाबले में साथ दे सकते हो और हर मौक़े पर आप सल्ल0 की हिफ़ाज़त का वादा करते हो, अगर तुम लोग मरते दम तक उनका साथ दे सकते हो तो ठीक है, वरना अभी से जवाब दे दो, अन्सार की तरफ से जवाब मिला, हम लोग तलवारों की गोद में पले हैं, हमें मालूम है कि हम किस चीज़ पर बैअत कर रहे हैं, और यह भी जानते हैं कि आप की बैअत दर हक़ीक़त अरब व अजम और जिन् व इन्सान से जंग है, अब्बास बिन उबादा ने कहा कि अगर हुजूर की इजाज़त हो तो हम कल ही मक्का वालों को अपनी तलवार के जौहर दिखा दें, आप सल्ल0 ने फ़रमाया 'नहीं, मुझे जंग की इजाज़त नहीं, उसके बाद नबी सल्ल0 ने अन्सार में से बारह लोगों को चुना, यह सबके सब अपने क़बीले के बड़े ज़िम्मेदार लोग थे[1]।

मदीने में इस्लाम को पनाह हासिल हुई तो आंहज़रत सल्ल0 ने सहाबा को इजाज़त दी कि मक्का से हिजरत कर जाएं, कुरैश को जैसे ही उसकी भनक लगी तो उन्होंने रोक टोक शुरु कर दी, लेकिन चोरी छुपे सहाबा–ए–कराम हिज़रत करते रहे, और धीरे–धीरे उनकी एक बड़ी तादाद मदीना पहुंच गई, मक्का में सिर्फ़ आंहज़रत सल्ल0, हज़रत अबू बक्र और हज़रत अली रज़ि0 और वह लोग जो मुफ़लिसी की वजह से हिज़रत पर कुदरत न रखते थे, बाक़ी रह गए।

हिज़रत करने वालों को हिज़रत करते वक़्त कुरैशे मक्का की सख़्त मुख़लिफ़तों और रुकावटों का सामना करना पड़ा, कुरैश ने हज़रत सुहैब रूमी रज़ि0 का सारा माल मता छीन लिया[2]।

---

1. सीरते इब्ने हिशाम, 441–444
2. सीरते इब्ने हिशाम 1/477 दलालुल नुबूवा, बैहिक़ी 2/522

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें.....

सिखाया था। फिर कहा जिस महिला के तीन बच्चे मर जाएं वह जहन्नम की ओट बन जाएंगे, अर्थात आड़ हो जाएंगे और वह जहन्नम में न जाने पाएगी। एक महिला ने पूछा कि यदि दो मरे हों? कहा, दो भी रोक हो जाएंगे।

(बुखारी–मुस्लिम)

तबाह बस्तियों पर रोना और उनसे बचने का बयानः हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 और आपके सहाबा जब हिज्र नामक स्थान पर अर्थात समूद की बस्ती में पहुँचे तो आप सल्ल0 ने कहा, इस अज़ाब (दण्ड) के स्थान से रोते हुए दाखिल हो, ऐसा न हो कि ये जिस संकट से ग्रस्त हुए कहीं तुम भी न हो जाओ। (बुखारी–मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि जब हिज्र की ओर से गुज़रे तो आप सल्ल0 ने कहा कि इन अत्याचारियों के स्थान पर रोते हुए दाखिल हो, इस डर से कि उन पर जो अज़ाब आया कहीं तुम पर न आ जाए। फिर आपने अपने पवित्र चेहरे पर नक़ाब डाल लिया और उस घाटी से जल्दी से निकल गए।

❑❑

—देवनागरी लिपि में उर्दू

दअवते इस्लामी- मोनज़्ज़म तरीक-ए-कार की ज़रूरत

—मौ0 सै0 मुहम्मद वाजेह रशीद हसनी नदवी

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दुनिया में अगर शर के अनासिर और असबाब में इज़ाफा है और मग़रिबी तहज़ीब के असर से मज़हब, अख़लाक़ और इन्सानी क़द्रों को चैलेन्ज का सामना है तो ख़ैर के अस्बाब व अनासिर में भी नुमाया इज़ाफा हुआ है और दिलों के ख़ाकस्तर में तलबे हक़ की चिंगारी फरोजां है और हक़ के चाहने वाले और ख़ैर के काम करने वाले बड़ी तादाद में मौजूद हैं और वह नेकी की राह में क़ीमती से क़ीमती चीज़ को क़ुर्बान करने के लिए तैयार हैं। यह जहानें रंगो बू रोज़े अज़ल से ही ऐसे रौशन व ताबनाक चेहरों और पाक व सादा दिल नुफूस से मअमूर रहा है, हक़ व इन्साफ की राह के ऐसे मुजाहिद, ग़ाज़ी जो शबो रोज़ इन्सान की अज़मत व करामत की फिक्र व कोशिश करते रहते हैं, जो लोगों को तंग दुनिया से वुस्अत की तरफ और बातिल मज़ाहिब के जुल्म व जौर, औहाम व ख़ुराफात की तारीकियों, गुमराहकुन ख़्यालात व नज़रियात और मादियत परस्ती से क़ल्बी तस्कीन और सआदत व नेक बख़्ती की जानिब गामज़न करने के दरपे रहे हैं, यह रूये ज़मीन हमेशा ऐसे पाक बातीन व नेक ख़स्त लोगों से पुर रही है जिन के अज़्म व हौसला और सलाबत व इस्तक़ामत को कोई तूफान मुतज़लज़ल नहीं कर सका, और इनके अग़राज़ व मक़ासिद के हुसूल में कोई इश्तिआल अंगेज़ी हायल नहीं हुई और ज़िन्दगी की मादी ज़रूरियात इनके लिए बहाना न बन सकीं। हक़ के पैग़ाम को बुलन्द करने में ऐसे लोगों का दिल हमेशा बेचैन रहता है और हक़ के लिए इन्होंने हर तरह की कुर्बानी दी और इस राह में पेश आने वाली दुनियावी मुश्किलात में इनको लज़्जत महसूस हुई और महरूमियों में और ज़ाहिरी नाकामियों में इन्होंने कामियाबी का सुरूर महसूस किया।

दुनिया का मुस्तक़बिल रौशन व ताबनाक है, अगर ऐसे नुफूस मौजूद हों जो दुनिया के शोर व हंगामों और मादी ज़िन्दगी के शोर व गुल के दर्मियान हक़ की बात बुलन्द करें, हक़ को तस्लीम करें और इसका दिल से इक़रार करें, दअइये हक़ की क़द्र व इज़्ज़त करें, और मुख़लिस दअईयों की बात को बग़ौर सुनने के लिए अवाम की तवज्जुह मबजूल करें।

राहे हक़ के सिलसिले में इस बेदारी का सबूत इस बात से मिलता है कि अवाम मुख़्लिस दअइयों और दीन के रास्ते में सरगर्म अफराद और तन्ज़ीमों का तआउन कर रही है, दीनी व अख़लाक़ी लिट्रेचर को क़ुबूल कर रही है और मदारिस और तालीमी व तर्बियती इदारों पर खर्च किया जा रहा है जो दुनिया के मुख़्तलिफ इलाक़ों में सरगर्मे सफर है, अगर इन तमाम कोशिशों और सरगर्मियों का सर्वे किया जाये जो फिक्री बेदारी, तालीम व तर्बियत,

समाजी व मआशी और ज़िन्दगी के दीगर मुख़्तलिफ मैदानों में दीनी जज़्बे से की जा रही है तो यह आलमी तन्ज़ीमों और इदारों से फायक़ नज़र आयेंगी, जिन्हें हर तरह के वसाईल और असबाब हासिल हैं, मुख़्तलिफ क़िस्म की रुकावटों और बन्दिशों के बावजूद दअवती और तअलीमी कोशिशों की कामियाबी को देख कर दुश्मनाने इस्लाम दहशत में पड़ गये हैं और सदाये हक़ को दबाने के दरपे हो गये हैं और दअवती और तअलीमी इदारों और तन्ज़ीमों को नित नये मसाइल व मुशकिलात, साज़िशों और दीगर मसाइल में उलझाने की आलमी सतह पर कोशिशें कर रहे हैं, कहीं दअईयों के सिलसिले में शक व शुब्हात पैदा किये जा रहे हैं, कहीं मामुली बातों और झगड़ों में इनकी तवानाइयों को ज़ाया किया जा रहा है, कहीं दाखिली तनाज़ुआत और एख़्तिलाफात को हवा दी जा रही है। कहीं इन्हें तअलीम व तर्बियत और तरक्की के मैदान से दूर किया जा रहा है, कहीं अवामी बग़ावत के जरिए इन्तिशार और अदमे इस्तक़रार पैदा किया जा रहा है, कहीं इस्लाह व तब्दीली और तरक्की के नाम पर साम्राजी और इलहादी निज़ाम को रायेज किया जा रहा है। राहे हक के सिलसिले में खुशशगुनी और उम्मीद महज़ इन मोतहर्रिक इस्लाही तन्ज़ीमों और इदारों को देख कर पैदा होती है जो दुनिया के मुख़्तलिफ इलाकों में सरगर्मे सफर हैं, अगरचः यह तन्ज़ीमें और इदारे पूरी दुनिया में फैली हुई इन्सानियत के तक़ाज़ों और ज़रूरतों के पेश नज़र नाकाफी हैं और यह इदारे इन्सानियत को दरपेश मसाइल व मुश्किलात और इनकी बेख़ाकुनी की साज़िशों और इन्हें दीगर मसाइल में उलझाने की आलमी कोशिशों को नज़र में रखते हुए कोई बहुत ज़्यादा वज़न नहीं रखते, लेकिन तअदाद की किल्लत और वसाइल की कमी के बावजूद वह ज़िन्दगी के बाज़ अहम पहलुओं पर मुहीत हैं और ज़िन्दगी व फिक्र के बहुत से अमराज़ के लिए वह शफ़ा बख़्श हैं और इनके ज़रिए ज़िन्दगी को एक जान, एक खुशगवार और सालेह फिक्र फराहम होती है जो इससे पहले मफकूद थी और स्कालरों और मोहक़्क़ेकीन ने इस इल्म व फिक्र के मैदान में ऐसी–ऐसी खोशाचीनियाँ शुरु कर दी हैं जिन से अब तक सर्फे नज़र किया जा रहा था, और इस्लाही कुव्वतों के अन्दर इत्तेहाद व इत्तिफाक़ और इस्तहकाम व तक़वियत पैदा करने के लिए यह इदारे पूरे तौर पर कोशां हैं और इसके लिए ठोस इक़दामात कर रहे हैं।

इस्लाम पसन्दों की इस्लाही कोशिशें सारी रुकावटों के बावजूद रोज़ बरोज़ बढ़ती और फैलती जा रही हैं, इन्होंने एक क़ाबिले ज़िक्र हलक़ाये असर पैदा कर लिया है, यह अब महज़ चन्द नुफूस और महदूद वसाईल पर ही मुश्तमिल नहीं हैं बल्कि नई ज़िन्दगी और नई रूह इनको रोज़ बरोज़ जिला बख्श रही है जो कल्म–ए–हक़ बुलन्द करने वालों के लिए मिन्जानिब अल्लाह अता हुई है, इसी तरह अल्लाह तआला ने काम करने वालों के ज़रिए इस उम्मत को बहुत से वसाइल से मालामाल कर रखा है, इस लिए अब यह मुमकिन नहीं रहा कि जौरोजफ़ा की शिकायत करे। अगरचे माज़ी में दअवते हक़ की राहें मसदूद थीं और इस के रास्ते मुश्किलात से भरे थे, लेकिन अब दअवती अमल भी जरिए

मआश बन गया है, जिसके रास्ते में मुख़्लिस और ग़ैर मुख़्लिस दोनों ही सरगर्म हो गये हैं, और इसमें ऐसे अनासिर भी दर आये हैं जो इस्लामी माहौल से मेल नहीं खाते, जिसकी वजह से कभी–कभी ऐसी हरकतें और आमाल सरज़द हो जाते हैं जो हकीकी इस्लामी तअलीमात से मुताबिक़त नहीं रखते।

इस्लामी सरगर्मियाँ जो इन्सानियत की इस्लाह के लिए हैं और माद्दी सैलाब को रोकने के लिए हैं, दुनिया के मुख्तलिफ हिस्सों में सरगर्मे अमल हैं, इसलिए अब ज़रूरत इस बात की है कि वह ख़ालिस इस्लामी मिज़ाज और इसकी तअलिमात के मुताबिक़ मोनज़्ज़म तौर पर अपने पैग़ाम और अमल को जारी करें और इनको तख़रीबकारी या तसादुम से बचायें ताकि इनकी मसाओ ज़ाया न हों या वह ऐसे मसाइल में उलझ न जायें जो इनके काम की राह में रुकावट बन जायें। इसी तरह इनको इश्तिआल अंगेज़ी और ग़ैर ज़रूरी प्रोपेगण्डा से भी गुरेज़ करने की ज़रूरत है।

दूसरा क़ाबिले तवज्जुह पहलू यह है कि इस वक़्त दुनिया में जो सरगर्मियां जारी हैं वह काम करने वालों के ज़ौक़ व हालात के मुताबिक़ इन्फेरादी कोशिशें हैं और मुश्किल हालात में भी यह मुख़्लिसाना तौर पर रवां–दवां रही हैं। जब कि साम्राजी दौर में दअइयों को मैदाने कार में बड़ी रुकावटें पेश आती थीं और साम्राज ने आपसी इत्तेहाद व इत्तेफाक़ और मुलाक़ात और मुज़ाकरह को मुश्किल बना दिया था, लेकिन अब दुनिया के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में ऐसे मराकिज़ क़ायम हैं जो दुनिया के हालात और इमकानात से वाक्फियत रखते हैं और इनके तजुर्बात और रिसर्च व तहकीकात से इसकी ज़रूरत महसूस की जा रही है कि हस्बे ज़रूरत और वसाइल व ज़राये की फ़राहमी के मुताबिक़ इन कोशिशों के माबैन इत्तेहाद व हम आहंगी पैदा की जाए, क्योंकि अब एक दूसरे नुक्तऐ नज़र को समझने की राहें खुल रही हैं और आलमी सतह पर मुलाक़ातों व मुज़ाकिरात और सेमिनारों का भी इन्अेक़ाद हो रहा है और मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर ऐसे सेमिनारों में इसके मवाक़ेअ आते रहते हैं जिन से हम अपनी कोशिशों का जायज़ा ले सकते हैं और हालात के मुताबिक़ हिकमतें अमल तैयार कर सकते हैं ताकि दुनिया में कोई इलाक़ा हक़ की सदा से ख़ाली न रहे और कोई फर्द जामेहक़ से तिश्न–ए–काम न रहे।

इस्लामी इदारे आलमी पैमाने पर इस कारेख़ैर के लिए सरगर्म हैं और वह इत्तेहाद व इत्तिफ़ाक़ और तर्बियत व सरपरस्ती के अक़दार के हामिल हैं। वह इस बात की ताक़त रखते हैं कि इन तमाम कोशिशों को एक प्लेट फार्म पर जमा कर दें और इलाक़ाई कोशिशों को एक मन्सूबाबन्द तरीक़े अमल मुहय्या करें, इस तरह वह सब मिलकर एक ही कश्ती के खेवनहार और नाख़ुदा बन जायें और एक ऐसे सरसब्ज़ व शादाब इलाका की तरह हो जायें जिस को एक ही पानी सैराब कर रहा हो, इस तरह वह अपने रब के हुक्म से समरआवर हो सकें।

लेकिन खुद इस्लामी मुल्कों की हुकूमतें इस इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ के रास्ते में रोड़ा बन रही हैं, दअवती और इस्लामी सरगर्मियों पर पाबन्दियां

आयद की जा रही हैं, हत्ता की इस्लामी निस्बत और दीनी शआयर को भी दहशतगर्द और इत्तेहाद पसन्दी से तअ़बीर किया जा रहा है।

बाज़ मुक़ामात पर सूरतेहाल यह है कि यकसां काम करने वालों की सरगर्मियां एक ही जगह जमा हो कर रह गई हैं, जबकि दूसरे इलाक़े तिश्नगी के आलम में ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं, इस लिए कि मुसलमान दुनिया के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में आबाद हैं और बाज़ ऐसे इलाकें हैं जहां वसाइल व ज़राये की बोहतात व फ़रावानी है तो बाज़ जगहों पर फ़करो फाक़ा की हुक्मरानी और वसाइल की कमी, इसी तरह मुसलमानों के मसाइल भी मुख़्तलिफ़ुननौ हैं, कहीं तअ़लीम की ज़रूरत है, कहीं इक़्तिसादी इस्लाह की, कहीं समाजी इस्लाह की, कहीं दीनी दअवत व तर्बियत की, कहीं इन्सानी ख़िदमात की, यह सारे मैदाने अमल हैं ज़िन में सरगर्मे अमल होना चाहिए।

यूरोपीय मुमालिक दावेदार हैं कि वह सेक्यूलर हैं, लेकिन वह सिर्फ अपनी नस्लों और क़ौमों का ख़्याल करती हैं, और अपने तसव्वुरे हयात, ख़ुदसाख़्तह तमद्दुन और सक़ाफत को आम करने के लिए अपने सियासी और इक्तिसादी वसाइल इस्तेमाल करती हैं, और इसको ज़बरदस्ती नाफिज़ करने के लिए तरह–तरह के कवानीन बनाती हैं, और जो मुमालिक इनके मुफ़ादात का ख़्याल नहीं करते उनको सज़ा दी जाती है, इसके बरख़िलाफ इस्लामी मुमालिक इस सिलसिले में बड़ी मसलिहत कोशी और तहफ्फुज़ बरतते हैं और दूसरे इस्लामी मुल्कों में होने वाली इन्सानी हुकूक की पामाली और उन पर हो रहे मज़ालिम के ख़िलाफ मज़म्मत करना भी गवारा नहीं करते, यहां तक कि वह इन्सानी बुनियादों पर भी इस्लामी उसूलों के मुताबिक़ अपनी राय ज़ाहिर करने के रवादार नहीं होते, इसकी हिम्मत महज़ वह तन्ज़ीमें और तहरीकें करती हैं जिन पर इनकी हुकूमतों की जानिब से बड़ी रुकावटें और पाबन्दियाँ आयद हैं, बाज़ मर्तबा तो यह इस्लामी मुमालिक जुल्म व जौर करने वालों की हमनवाई व पुश्तपनाही करते हैं और दुश्मनों के साथ दोस्ताना रवाबित रखते हैं। इसी के साथ इस्लामी तहरीक ऐसे इस्लाम दुश्मन मीडिया का भी सामना कर रही है जो इस्लामी उमूर की तस्वीर को ग़लत रुख़ देना ही अपना अव्वलीन फर्ज़ तसव्वुर करता है, इसकी ज़रूरत है कि इस मीडिया का कुव्वत के साथ मुक़ाबला किया जाये और यह काम इस्लामी हुकूमतों के तआऊन के बग़ैर मुमकिन नहीं है।

आज ज़रूरत इस बात की है कि जहां–जहां मुसलमान आबाद हैं इनके हालात व मसाइल का जायज़ा लिया जाये और इनके हक़ाइक़ व मुआमलात का भरपूर तजज़िया किया जाये और ज़रूरत के मुताबिक़ इल्मी व फिक्री सरमाया का तबादला व फराहमी की जाये, इस तरह के इलाक़े हर मुल्क व वतन में मिल जाएंगे जो नज़र अन्दाज़ कर दिये गये और अपनी जानिब तवज्जुह के तालिब हैं, इस वक़्त तमाम तर तवज्जुहात बाज़ ख़ास मुल्कों और इलाकों तक महदूद होकर रह गई हैं, इसलिए जब तहक़ीक़ व मुताले के ज़रिये इन पसमान्दा इलाक़ों

शेष पृष्ठ.....20 पर

क़िस्सा आदम के दो बेटों का

—बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ये क़िस्सा उस ज़माने का है जब हज़रत आदम अलै0 को इस दुनिया में आये हुए लम्बा समय बीत चुका था। उनके बेटों और बेटियों की बड़ी संख्या बेआबाद दुनिया की आबादी और रौनक़ का ज़रिया बन रही थी। सब एक अल्लाह की इबादत करते और उसकी दी हुई नेमतों पर शुक्र करते और इत्मिनान से ज़िन्दगी गुज़ारते। इब्लीस को उनकी ये एकता व इत्मिनान व सुकून ज़रा न भाता था। वह हर समय ताक में लगा रहता कि जिस तरह उसने आदम को जन्नत से निकलवा कर दुनिया में उतरवाया उसी तरह वो उनकी औलाद को बहकाए और जन्नत में जाने के क़ाबिल न रखे मगर उसको अभी तक इसका मौक़ा नहीं मिल सका था।

चूंकि उस समय दुनिया में केवल आदम अलै0 के बेटे और बेटियां थीं इसलिए विशेष तौर पर ये इजाज़त थी कि आपस में उनकी शादियां हो जाएं ताकि दुनिया की रौनक़ बढ़े और इन्सानी नस्ल में बढ़ोत्तरी होती जाए। हज़रत आदम अलै0 मुनासिब अन्दाज़ में देखभाल कर उनमें निकाह कर दिया करते थे। एक बार हज़रत आदम अलै0 ने अपने एक बेटे का रिश्ता अपनी एक बेटी से किया और दूसरे बेटे का दूसरी बेटी से, उनमें से एक के पास शैतान को घुसने का मौक़ा मिल गया, उसने जाकर कहा कि तुम्हारे बाप ने खूबसूरत बेटी दूसरे बेटे को दे दी ये अच्छा नहीं हुआ। इस तरह उसने इस बेटे के अन्दर जलन पैदा कर दी। उसका नाम क़ाबील बताया जाता है। जलन के नतीजे में क़ाबील के अन्दर और भी तरह–तरह की ख़राबियां पैदा होती गयीं। अल्लाह का ख़ौफ़ निकलता गया और वो ग़लत रास्ते पर पड़ गया। शैतान को पूरी तरह मौक़ा मिल गया। एक बार क़ाबील ने और उसके भाई हाबील ने जिससे क़ाबील को जलन थी, अल्लाह के लिए क़ुर्बानियां पेश कीं। उस समय का दस्तूर था कि जिसकी क़ुर्बानी क़ुबूल होती उसको एक आग आकर खा लेती और अगर किसी की क़ुर्बानी को आग नहीं खाती थी तो ये पहचान होती थी कि क़ुर्बानी करने वाले की नियत में खोट है। बस हुआ ये कि हाबील की क़ुर्बानी को आग ने खा लिया और क़ाबील की क़ुर्बानी धरी की धरी रह गयी। ये देखकर उसके जलन की आग भड़कने लगी। वो बोला कि मैं तुझे छोड़ूगा नहीं, वो बिल्कुल बेक़ाबू हो रहा था, हाबील ने ये देखकर कहा कि भाई! इसमें गुस्से की क्या बात है? तुम्हें अपने सुधरने की फिक्र करनी चाहिए। अल्लाह तआला तो केवल परहेज़गारों की क़ुर्बानी क़ुबूल करते हैं। और अगर तुम मुझे क़त्ल करना चाहते हो और उसके लिए हाथ बढ़ाते भी हो तो मैं उस बदतरीन काम के लिए हाथ नहीं उठा सकता। मुझे अल्लाह का डर है और ठीक ही है कि मैं तो चाहता हूं कि तूम मेरे और अपने गुनाहों का बोझ लाद लो, लेकिन इसका नतीजा जहन्नम है, ज़ालिमों का बदला यही है।

बात यहां ख़त्म हो गयी। मगर क़ाबील पर उसका कोई असर न हुआ और वो उधेड़बुन में रहा, यहाँ तक कि एक दिन उसकी नफ़्स ने उसको क़त्ल करने पर आमादा ही कर लिया और उसने मौक़ा पाकर हाबील का काम तमाम कर दिया और ये न सोचा कि उसका अन्जाम क्या होगा।

पूरी मानवता का ये पहला क़त्ल था। इससे बढ़कर नुक़सान की बात और क्या होगी कि उसने क़त्ल की बुनियाद डाली, अब क़यामत तक जो क़त्ल होते रहेगें उनका गुनाह भी उसके सर जाएगा। शैतान अपनी कामयाबी पर मुस्कुरा रहा था और क़ाबील हाबील की लाश को लिए परेशान खड़ा था कि इसका क्या करे। अल्लाह ने इसकी शर्मिन्दगी का ये सामान भी किया कि कौव्वे को उसका उस्ताद बनाया। वो एक मरे हुए कौव्वे को लाया और अपनी चोंच से ज़मीन खोद कर मरे हुए कौव्वे को उसने उसमें डाल दिया और मिट्टी को बराबर कर दिया।

क़ाबील शर्मिन्दगी में गड़ गया कि कौव्वा उसका उस्ताद बना लेकिन उसको अपने इस क़त्ल पर ज़रा भी शर्मिन्दगी न हुई कि वो अल्लाह की बारगाह में तौबा करता और नयी ज़िन्दगी की शुरुआत करता। यहां एक तरफ शैतान की जीत हुई और आदम का एक बेटा हार गया लेकिन दूसरी तरफ़ हाबील ने उसको हरा दिया, वो शहादत की मौत पाया।

अल्लाह तआला ने क़ुर्आन मजीद में यह वाकया बयान करके क़यामत तक के लिए आने वाली आदम की औलादों को सबक़ दे दिया कि आदम–शैतान में लड़ाई जो शुरु हुई थी वो क़यामत तक रहेगी, जिसने ये हक़ीक़त समझी वही कामयाब हो गया। दूसरा सबक़ इसमें ये है कि जलन आदमी को आग की तरह खा जाती है और इसके परिणाम में एक आदमी कहाँ तक गिरता चला जाता है और वो हर तरह के अन्जाम से बेख़बर हो कर पेश क़दमी कर बैठता है।

अल्लाह ने इस वाकये में अच्छाई और बुराई दोनों के नमूने दे दिये। एक तरफ़ हाबील का अच्छा नमूना है और दूसरी तरफ़ क़ाबील का हलाक होने वाला तरीक़ा है। एक तरफ़ हाबील का सब्र, इख़्लास व तक़्वा है। दूसरी तरफ़ क़ाबील का जुल्म, हसद, अन्जाम से लापरवाही और गुस्सा है।

एक का नतीजा अस्ल कामयाबी है और दीन व दुनिया की इज्ज़त है और दूसरे का नतीजा दुनिया व आख़िरत की ज़िल्लत है। एक इन्सान के लिए ख़ैर का नमूना है, दूसरा रहती दुनिया के लिए जुल्म व सितम की पहचान है। एक ने जुल्म व सितम के बावजूद हाथ न उठाकर दरगुज़र की राह क़ायम की और दूसरे ने क़त्ल करके दुनिया को एक ग़लत रास्ता दिया। कहने क़ा अर्थ यह है कि अच्छाई और बुराई के ये दो नमूने हैं, जिसमें क़यामत तक आने वाले इन्सानों के लिए इबरत का सबक़ भी है और नसीहत भी है। ❑❑

स्वागत तथा अनुरोध

हम आपके परामर्शों का स्वागत करते हैं तथा लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सरल भाषा में लिखें।

इदारा

बेहयाई का सैलाब

—मौलाना मुहम्मद सानी हसनी

इस समय दूसरे देशों की तरह हमारे देश में भी औरतों में ख़ुदाबेज़ारी और बदअख़लाक़ी फैलाने के व्यवस्थित आन्दोलन चल रहे हैं। ख़ास कर मुसलमान पर्दे वाली औरतों की तरफ़ इसका विशेष ध्यान है। बदअख़लाक़ी और बेदीनी आम करने के लिये, मुसलमान औरतों को इस रास्ते पर डालने के लिए हर सम्भव प्रयास किये जाने लगे हैं। ये प्रयास बदक़िस्मती से बहुत सी मुसलमान औरतें जो खुद आज़ाद हैं, बेबाक और दीन से दूर हैं के लिए मददगार साबित हो रहे हैं। सैर व तफ़रीह के ज़रिए से, लिट्रेचर के ज़रिए से, फिल्मी गानों और गन्दी–नंगी तस्वीरों के ज़रिए, बातचीत के ज़रिए, समाज व मामलात के ज़रिये, यहां तक कि आर्थिक दबाव के द्वारा घर–घर इस बीमारी को आम करने की साज़िश है, और तेज़ी के साथ ये बीमारी उन घरों में घुस रही है जो अख़लाक़ व शराफ़त, दीनदारी और शर्म व हया में विशेषता के मालिक थे। जिस तरह कोई बीमारी फूट निकली है और लोग इसका शिकार हो जाते हैं, इसी तरह ये बीमारी शहर, देहात, निचले वर्गों, उच्च घरानों में बिना किसी अन्तर के प्रवेश करती जा रही है और इस कीटाणु से अच्छे–अच्छे घराने जिनको अपनी दीनदारी और तक़्वा पर नाज़ था अपने को सुरक्षित नहीं पाते। जानबूझ कर या अनजाने में इसके असरात को कुबूल करते जा रहे हैं। जिसके परिणाम विभिन्न परिवारों में बड़े गम्भीर और परेशान करने वाले निकलने लगे हैं, जिसकी तफ़सील की यहां गुन्जाइश नहीं है। हर भावुक बहन इसकी कड़ुवाहट को ज़रूर महसूस करती होगी, चाहे आंख से देखकर या कानों से सुनकर। ये बीमारी, और इसके तबाह करने वाले परिणाम साधारण से साधारण होते जा रहे हैं और ये कोई इल्मी बात नहीं रही कि जिसको दलीलें या मिसालें देकर समझाया जाए। लेकिन अफ़सोस है कि बद–अख़लाक़ी और उसके परिणाम, बेदीनी और उसके परिणाम का बहनों को एहसास नहीं, यहां तक कि इसकी रोकथाम या कम से कम अपनी सुरक्षा की चिन्ता किसी को नहीं, और अगर है तो इस तरह है जिसकी मिसाल सागर में बूंद की तरह है जो सागर में गिर जाती है तो अपना अस्तित्व खो देती है। ये बीमारी हैज़ा और प्लेग से भी ज़्यादा ख़तरनाक और सख़्त है। आम औरत जो भले और बुरे की तमीज़ नहीं रखती या वो औरतें जो बेदीनी और बदअख़लाक़ी को नहीं समझतीं बल्कि उन्नति या स्वतन्त्र विचारों को जानती हैं उनसे सीधे कुछ कहना नहीं, हमारी प्रार्थना दीनी भाव रखने वाली और अख़लाक़ी भाव व शर्म व हया का एहसास रखने वाली बहनों से है जो बहरहाल इस परेशानी और इस मुसीबत को ज़हर से ज़्यादा हानिकारक महसूस करती हैं कि आप अपनी ताक़त और दीनी भाव और अख़लाक़ी ताक़त को क्यों नष्ट कर रही हैं और एहसासे कमतरी का शिकार हो कर इस बीमारी के सामने क्यों सर झुका रही हैं। आप कोशिश क्यों नहीं करतीं कि आपका घर, आपके पड़ोसी, आपकी बहनें, आपके

शेष पृष्ठ.....25 पर

हज़रत ज़ैनब बिन्ते अली रज़ि0

—तालिब हाशमी

रबीउल अव्वल सन् 11 हिजरी में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के जाने का समय क़रीब आया तो आप सल्ल0 ने अपनी प्यारी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 से कहा कि अपने बच्चों को बुला लाएं। हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 अपने बच्चों को अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास ले गयीं। बच्चों ने अपने नाना को बेचैन देखा तो फफक कर रोने लगे। उन्हीं बच्चों में से एक 6 वर्ष की बच्ची को तो इतना सदमा हुआ कि उसने आप सल्ल0 के मुबारक सीने पर अपना सिर रख दिया और सिस्कियां भरने लगी। आप सल्ल0 ने उस बच्ची की पेशानी चूमी और सहानुभूति भरा हाथ उसके सिर पर फेरा और दिलासा दिया।

यह वही बच्ची थी जो 6 साल पहले हज़रत अली रज़ि0 और हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 के घर पैदा हुई थी। उस समय आप सल्ल0 मदीना मुनव्वरा में मौजूद नहीं थे। तीन दिनों के बाद आप सल्ल0 मदीना तशरीफ़ लाए तो सीधे हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 के घर गये, बच्ची को गोद लिया और बहुत देर तक रोते रहे।

आप सल्ल0 ने उस बच्ची का नाम "ज़ैनब" रखा और कहा, "यह हज़रत ख़दीजा रज़ि0 की हमशक्ल है।"

6 साल के बाद वही ज़ैनब अपने नाना से हमेशा के लिए बिछड़ रही थी। उस मासूम जान के लिए यह एक बहुत बड़ी घटना थी, लेकिन उसे क्या ख़बर थी कि भविष्य में उस पर इतनी मुसीबतें आएंगी कि उसे "उम्मुल मसाएब" कहा जाने लगेगा।

हज़रत ज़ैनब बिन्ते अली रज़ि0 इस्लामी इतिहास की एक महान शख़्सियत हैं। वह जिस घराने में पैदा हुई वह दुनिया का सबसे बेहतरीन घराना था। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 आपके नाना, हज़रत ख़दीजा रज़ि0 आपकी नानी, हज़रत अली रज़ि0 आपके पिता और हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 आपकी माँ थीं। सैयदना हज़रत हसन रज़ि0 और सैयदना हज़रत हुसैन रज़ि0 आपके भाई थे। हज़रत जाफ़र तैयार रज़ि0 आपके चचा थे।

सन् 5 हिजरी में जमादी उल—अव्वल के महीने में आपका जन्म हुआ। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने स्वयं उनका नाम ज़ैनब रखा। 'उम्मुल हसन' या 'उम्मे कुल्सूम' के नाम से मशहूर हुई। लेकिन कर्बला की घटना के बाद उन्हें लोग "उम्मुल मसाएब" के नाम से पुकारने लगे।

इनका लालन—पालन किस ढंग से हुआ उसकी कुछ बानगी सुनियेः

1. हज़रत ज़ैनब रज़ि0 अपने बचपने के दिनों में एक दिन कुर्आन मजीद पढ़ रही थीं। बेख़्याली में सिर से ओढ़नी खिसक गयी। हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 ने देखा तो प्यार से उनके सिर पर ओढ़नी डाल दी और कहा, "बेटी, अल्लाह का कलाम नंगे सिर नहीं पढ़ते।"

2. एक दिन हज़रत हुसैन रज़ि0 और हज़रत ज़ैनब रज़ि0 में किसी बात पर लड़ाई हो गयी। हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 ने देखा तो दोनों बच्चों को कुर्आन की आयतें सुनाईं और

उन आयतों की रौशनी में कहा "बच्चो! लड़ाई से अल्लाह तआला नाराज़ हो जाता है।" दोनों बच्चे अल्लाह के भय से काँप उठे और प्रण किया कि भविष्य में कभी नहीं लड़ेंगे। बच्चों के इस संकल्प की बातें सुनकर हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 बहुत खुश हुई और उन्हें सीने से लगा लिया।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 हज़रत ज़ैनब रज़ि0 को बहुत प्यार करते थे, कई बार आप हज़रत हसन रज़ि0 और हज़रत हुसैन रज़ि0 के भांति अपने नाना के पीठ पर चढ़कर सवारी कर लिया करती थीं। जब हज्जतुल विदाअ के लिए मक्का शरीफ़ ले गये तो नन्ही ज़ैनब भी उनके साथ थीं। उस समय ज़ैनब रज़ि0 केवल 5 वर्ष की थीं।

सन् 11 हिजरी में आप सल्ल0 इन्तिक़ाल फ़रमा गये। 6 माह के बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 भी चल बसीं। मां और नाना की जुदाई से हज़रत ज़ैनब निढ़ाल हो गईं। बच्चों के लालन–पालन की ज़िम्मेदारी स्वयं हज़रत अली रज़ि0 ने संभाल ली।

हज़रत ज़ैनब रज़ि0 ने अपने पिता के ज्ञान और अन्य विशेषताओं से भरपूर फ़ायदा उठाया और जल्द ही बुद्धि एवं विवेक, हक़गोई और बेबाकी, इफ़्फ़तो–इस्मत और इबादत व शबबेदारी में अपनी माँ हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 के समान हो गयीं।

लम्बा एवं छरहरा शरीर, मुखमंडल पर अपने नाना का जलाल और चाल–ढाल में अपने पिता हज़रत अली रज़ि0 की झलक हज़रत जैनब रज़ि0 की शख़्सियत को और भी निखार रही थी।

सभी इतिहासकार इस बात पर सहमत हैं कि इल्म व फ़ज़्ल में केवल बनू हाशिम ही नहीं बल्कि तमाम क़ुरैश में कोई लड़की हज़रत ज़ैनब रज़ि0 की बराबरी नहीं कर सकती थी।

हज़रत ज़ैनब रज़ि0 जब युवावस्था को पहुंचीं तो अनेक रिश्ते आने लगे जिनमें कुन्दा क़बीले के मशहूर रईस अशअस बिन क़ैस भी शामिल थे। लेकिन हज़रत अली रज़ि0 ने अपनी बेटी के लिए हज़रत जाफ़र तैयार बिन अबी तालिब रज़ि0 के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 को पसन्द किया और अपनी बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ि0 का निकाह बहुत ही सादे तरीक़े से हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 के साथ पढ़ा दिया।

उस समय हज़रत ज़ैनब रज़ि0 की आयु ग्यारह या तेरह वर्ष थी। निकाह के बाद परिवार की महिलाओं ने उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 के घर पहुंचा दिया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि0 उस समय व्यापार करते थे।

हज़रत ज़ैनब रज़ि0 का वैवाहिक जीवन बहुत ही सुखद था। वे अपने पति की ख़ूब सेवा किया करती थीं, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 भी उनकी दिलजोई में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ते थे। यद्यपि घर में सेवक/सेविकाएं सभी थीं लेकिन वे घर का अधिकांश काम स्वयं किया करती थीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि0 अक्सर कहा करते थे: "ज़ैनब बेहतरीन घर वाली हैं।"

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 का हाथ बहुत खुला हुआ था। ग़रीबों और मुहताजों की दिल खोलकर मदद किया करते थे। हज़रत फातिमा रज़ि0 की बेटी भी उसी रंग में रंगी हुई थी। यह असंभव था कि कोई ज़रूरतमंद उनके द्वार पर आये और ख़ाली हाथ चला चाए या किसी के मुसीबत की उन्हें ख़बर हो और वे उनके घर हाल–चाल पूछने न पहुंचे।

एक बार हज़रत हुसैन रज़ि0 ने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 को टोकते हुए कहाः"ऐ मेरे चचा के बेटे! तुम बहुत असराफ़ से काम लेते हो और ऐसे लोगों को भी अपनी कमाई में शरीक कर लेते हो जो उसके मुस्तहिक़ नहीं होते।"

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 ने जवाब दिया "भाईजान! क्या करूं? साएल को देख कर दिल क़ाबू में नहीं रहता। अल्लाह ने मुझे यह धन इसीलिए दिया है कि उसे अपने बन्दों में बाँटूं।"

पति के घर में दौलत की फरवानी भी हज़रत ज़ैनब के मिज़ाज में कोई बदलाव नहीं ला सकी और वह धैर्य–संयम, सादगी और जफ़ाकशी का पैकर बनी रहीं। ❑❑

कुर्आन की शिक्षा.....

4. एक गज़ब तो ये कि कुर्आन बल्कि उसके साथ अपनी किताब के भी मुन्किर हो कर काफिर हुए, दूसरा ये कि केवल ईर्ष्या और ज़िद से उस समय के सन्देष्टा (रसूल) के विरुद्ध किया।

5. इससे ज्ञात होता है कि हर अज़ाब (ईशदण्ड) ज़िल्लत के लिए नहीं होता बल्कि मुसलमानों को जो उनके गुनाह की वजह से होगा, गुनाहों से पाक करने के लिए होगा न कि ज़लील करने के लिए। अलबत्ता काफिरों को अज़ाब ज़िल्लत के लिए दिया जाएगा।

6. जो अल्लाह ने भेजा अर्थात इंजील और कुर्आन जो उतरा हम पर यानी तौरेत, मतलब ये हुआ कि तौरेत और दूसरी किताबों का साफ इन्कार करते हैं और इंजील व कुर्आन को नहीं मानते हालांकि वह किताबें भी सच्ची और तौरेत की पुष्टि करने वाली हैं।

7. उनसे कह दो यदि तुम तौरेत पर ईमान रखते हो तो फिर तुमने नबियों (सन्देष्टाओं) की हत्या क्यों की जबकि तौरेत में ये आदेश है कि "जो नबी तौरेत को सच्चा कहने वाला आए उसकी सहायता करना और उस पर ज़रूर ईमान लाना"। और हत्या उन नबियों की कि जो पहले गुज़र चुके हैं (जकरिया अ0 और हज़रत यह्या अ0) जो तौरेत के आदेशों पर अमल करते थे और उसके प्रसार हेतु अवतरित हुए थे, उनको तौरेत का पुष्टिकर्ता होने में किसी बेवकूफ को भी झिझक नहीं है।

❖❖❖

दअ़वते इस्लामी.....

का जायज़ा लिया जाएगा और सरकारी हल्कों और रज़ाकारांना तहरीकों के दर्मियान तआऊन पैदा किया जाएगा तो इस तहरीक के जो असरात व नताएज हैं वह इससे कहीं ज़्यादा बारआवर होंगे, और फैज़ान तो दरअस्ल वह है जो आम हो और हर कसो नाकस इससे आसूदा हो, बाज़ इदारों की ज़्यादा तर तवानाइयां ऐसे ईशकालात और इल्ज़ाम तराशियों के दिफा पर सर्फ हो रही हैं जिसकी अब कोई ज़रूरत नहीं है, आज ज़रूरत है कि काम के नये मैदान इख़्तियार किये जायें, अमली तौर पर इस्लाम की हक़्क़ानियत और सलाहियत को साबित किया जाये। ज़िन्दगी के मसाएल इस्लामी तअ़लीमात की रौशनी में मुअस्सर मआसिरे इल्मी अन्दाज़ में हल किये जायें और ज़िन्दगी के तमाम शोअबों में इस्लाम की सही और बेहतर नुमाइन्दगी पेश की जाये, ताकि इस्लाम की सही तस्वीर सामने आये और कौल व अमल के दर्मियान जो तज़ाद है वह दूर हो।

❖❖❖

इद्दत एवं सोग के आदेश

—मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

पति के मरने या उससे अलग होने के बाद शरीअत ने एक निश्चित अवधि तय की है जिसमें औरत किसी दूसरे मर्द से निकाह नहीं कर सकती। इस अवधि को शरीअत की भाषा में "इद्दत" कहा जाता है। इद्दत में ज़ाहिरी तौर पर खुली हुई मसलहतें समझ में आती हैं। एक तो इसके द्वारा औरत पति की जुदाई पर ग़म प्रकट करती है और अल्लाह ने बीवी की जो नेमत अता कर रख थी उसके जाने पर दुख प्रकट करती है। जबकि दूसरी हिकमत ये होती है कि बिल्कुल इत्मिनान हो जाए कि शौहर का बच्चा तो उसके जिस्म में नहीं पल रहा है, फ़ौरन शादी की इजाज़त होती और जल्द ही बच्चे की पैदाइश होती तो शक हो जाता कि ये बच्चा पहले पति का है या दूसरे पति का। शरीअत इस प्रकार के शक को जड़ से मिटा देना चाहती है। इस उपाय के मद्देनज़र हिकमत आयी है।

फिर इद्दत दो तरह की होती है: तलाक़ की इद्दत और मौत की इद्दत।

तलाक़ की इद्दतः इसके कई प्रकार होते हैं:

1. अगर औरत गर्भवती हो तो उसकी इद्दत गर्भ के कारण है। इसलिए अल्लाह तआला का इरशाद है: (अनुवादः गर्भवती औरत की इद्दत ये है कि बच्चा पैदा हो जाए)

2. अगर औरत गर्भवती न हो, मगर उसकी माहवारी का सिलसिला जारी हो तो उसकी इद्दत ये है कि इगर पाकी की हालत में तलाक़ दी है तो उसके बाद तीन माहवारी हो जाए, और अगर माहवारी में तलाक़ दी है तो उस माहवारी को छोड़कर और तीन माहवारी हो जाएं। माहवारी की हालत में तलाक़ देना मना है। लेकिन अगर कोई तलाक़ दे दे तो तलाक़ हो जाती है, लेकिन इस माहवारी को इद्दत में नहीं गिना जाता। इस प्रकार की औरत की इद्दत का आदेश बयान करते हुए अल्लाह तआला का इरशाद है: (अनुवादः तलाक़ दी हुई औरतें जिनको माहवारी आती हो तीन माहवारी तक इद्दत गुज़ारें)।

3. अगर उम्र कम होने या ज़्यादा होने के कारण माहवारी का सिलसिला बन्द हो गया हो तो इस तरह की औरत तीन महीने इद्दत गुज़ारेगी, अगर चाँद की पहली तारीख़ को तलाक़ दी तो तीन चांद के महीने इद्दत गुज़ारेगी, चाहे महीना तीस का हो या उन्तीस का। और अगर बीच में तलाक़ दी है तो एक महीना तीस दिन का गिनते हुए नब्बे दिन इद्दत गुज़ारेगी। इस प्रकार की औरत की इद्दत का वर्णन करते हुए अल्लाह तआला का आदेश है: (और जो औरतें ना उम्मीद हो गयीं माहवारी से तुम्हारी औरतों में अगर तुम को शक रह गया तो उनकी इद्दत है तीन महीने और ऐसे ही जिनको माहवारी न आती हो)।

4. अगर किसी औरत को उसके पति ने खलवत—ए—सहीहा (मर्द की औरत से

मुलाक़ात) होने से पहले ही तलाक़ दे दी तो शरीअत की ओर से उसके लिए कोई इद्दत नहीं, वो तलाक़ के फ़ौरन बाद ही दूसरी शादी कर सकती है।

इद्दत तलाक़ की यही क़िस्में हैं। अतः स्पष्ट हो गया कि जो एक आम बात है कि औरत की इद्दत तीन महीने तेरह दिन होती है, इस हद के साथ औरत की कोई इद्दत नहीं पायी जाती, हां सम्भव है कि इद्दत गुज़ारने वाली औरतों में किसी के तीन माहवारी इस अवधि में पूरे हों तो अलग बात है।

तलाक़े रजअी (जब स्पष्ट रूप से एक या दो तलाक़ दी हो तो उसको तलाक़े रजअी कहते हैं और इद्दत के दौरान शौहर को अधिकार होता है कि संबंध स्थापित कर ले, सरीह अल्फ़ाज़ का मतलब ये होता है कि तलाक़ के अल्फ़ाज़ से तलाक़ दे) में हुक्म ये है कि औरत ज़ेब व ज़ीनत अख़्तियार कर सकती है, बल्कि उसे एहतेमाम से श्रृंगार करना चाहिए ताकि शौहर का दिल उसकी ओर आकर्षित हो। और पूरी तरह से जुदाई की नौबत न आ सके। जब तक इद्दत बाक़ी रहे वह हुक्मी एतबार से पूरी तरह शौहर की बीवी बनकर रहती है। अतः जिस तरह किसी की बीवी को निकाह का पैग़ाम देना सही नहीं उसी तरह इस औरत को भी निकाह का पैग़ाम देना सही नहीं है न जानबूझ कर न इशारे से।

जहां तक तलाक़े मुग़ल्लज़्ज़ा (पूरी यानि तीन तलाक़) और तलाके बाइन (जब ग़ैर सरीह शब्दों में तलाक़ की नियत से एक या दो तलाकें दी हों जैसे तलाक़ की नियत से कहे कि आज़ाद हो वग़ैरह) का संबंध है, उसमें तलाक़ होते ही ज़ौजियत ख़त्म हो जाएगी, लिहाज़ा इसके लिए इद्दत के दौरान ज़ेब व ज़ीनत अपनाने पर मनाही है जिसका मक़सद इस जुदाई पर अफ़सोस का इज़हार करना होता है, लिहाज़ा उसे चाहिए कि इस दौरान न खुशबू लगाए, न ज़ेवरात पहने, न क्रीम–पाउडर वग़ैरह लगाए, यहाँ तक कि जिस चीज़ का संबंध भी श्रृंगार से है उसके लिए उसका करना नाजाएज़ है, उस औरत को भी खुले तौर पर या इशारे से निकाह का पैग़ाम देना ठीक नहीं है।

तलाक़ चाहे जिस प्रकार की हो तलाक़ का खर्च पति के ज़िम्मे होता है। और रिहाइश का इंतेज़ाम भी उसी के ज़िम्मे होता है। इद्दत के लिए असली हुक्म यही है कि उस मकान में गुज़ारे जहां तलाक़ से पहले शौहर के साथ थी। अगर वहां कोई सख़्त दुश्वारी हो या इज़्ज़त व इस्मत का ख़तरा हो तभी अलग जा सकती है। लिहाज़ा किसी माहिर मुफ़्ती से मिले बग़ैर वहां से नहीं हटना चाहिए।

इद्दते वफ़ातः जिस औरत के शौहर का इंतकाल हो जाये उसके बारे में इस्लाम की आमद से पहले अजीब व ग़रीब व वहशियाना रस्में चलन में थीं। वाक़ेयात सुनने में आते हैं कि जैसे हिन्दुस्तान में उसको पति के साथ ही ज़िन्दा जला दिया जाता था, इस रस्म का नाम सती प्रथा था, राजस्थान के कई इलाक़ों में अब भी कभी–कभी इस तरह के वाक़ेयात सुनने में आते हैं। अरब उस औरत को एक साल तक कोठरी में डाले रखते थे और खास रस्म की अदायगी के बाद ही उसको निकलने देते थे। इस तरह की औरतों को आम तौर

शेष पृष्ठ.....31 पर

हज़रत नाज़िम साहब नदवतुल उलमा की एक तकरीर से

फरमायाः अगर तुम जन्नत में आला मकाम हासिल करना चाहते हो तो तुम्हें अपने तमाम आमाल में अल्लाह तआला की रजा ढूँढनी होगी, उसके लिए बेहतरीन नमूना (आदर्श) अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्ल0 को बनाया है।

जिस तरह आप सल्ल0 ने जिन्दगी गुजारी, अपनी–अपनी जिन्दगी में आप सल्ल0 की ज़िन्दगी से हमें रहनुमाई हासिल करनी होगी, वह बातें जो रसूलुल्लाह सल्ल0 की हयाते तय्यिबा में पाई जाती हैं, जैसे आपका बोलना, चलना–फिरना, खाना–पीना, पहनना, मुआमला करना, किसी से हुस्ने सुलूक करना, मुहब्बत करना, तमाम चीज़ों को देख कर हमें अपनी ज़िन्दगी के आमाल इख़्तियार करने होंगे।

सीरतुन्नबी के जल्से बड़े मुफीद होते हैं, सीखने के दो तरीक़े होते हैं, पढ़ कर सीखना या सुनकर सीखना, किताबें सब तक नहीं पहुँच पातीं, जल्से और तकरीरें एक बड़ा जरीय–ए–तालीम उन लोगों के लिए बन जाती हैं जो किताबों के ज़रिए नहीं सीख पाते।

जहाँ तक मुहब्बत का तअल्लुक़ है तमाम लोगों से ज़्यादा मुहब्बत आंहुजूर सल्ल0 की होनी चाहिए। सहाब–ए–किराम को देखिए, उन्होंने हुजूर सल्ल0 से मुहब्बत की ऐसी मिसाल काइम की कि जिसकी किसी क़ौम में नज़ीर नही मिलती। एक साहब ने दुश्मनों के सामने बांगे दुहल (एलान करके) कहा कि आंहुजूर सल्ल0 को फांस लग जाए, कांटा चुभ जाए यह हमें बरदाश्त नहीं, चाहे हमारी जान चली जाए। दुश्मन तीर चला रहे थे, सहाबा ने महसूस किया कि तीर कहीं हुजूर सल0 को न लग जाए खुद सामने आ गये कि आपको तीर न लगे। एक सहाबी अपने हाथों पर तीर को लेते रहे और हुजूर सल्ल0 को बचाते रहे इसमें सहाबी का हाथ घायल हो गया। सहाबा का मकाम अल्लाह तआला ने यूं ही बुलन्द नहीं किया, अल्लाह तआला ने दीन के लिए उनकी फिदाइयत और इख़लास को देखा तो उनके मकाम को नबियों के बाद सब पर बुलन्द किया।

और हुजूर सल्ल0 की सीरत भी आजमाइशों में भी नमूना (आदर्श) है। बाप को देखा ही नहीं, माँ का इन्तिक़ाल उस वक्त हुआ जब आप पाँच या छः साल के थे, फिर दुश्मनों की ओर से तकलीफें और घर के करीबी लोगों में चचा और बीवी का इन्तिकाल, फिर ताइफ का वाकिया, कितना तकलीफ देने वाला पेश आया, लेकिन आपने सब्र किया और दुआ करते रहे, दुश्मनों के हक़ में दुआ करते रहे।

अल्लाह तआला उस ईमान को क़बूल नहीं करेगा जिसके साथ हुजूर सल्ल0 की इताअत न हो और मुहब्बत न हो, जो लोग हुजूर सल्ल0 से मुहब्बत नहीं करते उनके लिए खतरा है। मुहब्बत को जांचते रहना चाहिए कि मुहब्बत सच्ची है कि नहीं, मुहब्बत जिस दर्जे होनी चाहिए है या नहीं, और हमारा काम कोशिश करते रहना है, इस बात की फिक्र करें और इसका शौक हमारे अन्दर हो। बराबर यह कोशिश करते रहें कि आपकी पूरी इताअत हम करें और पूरी मुहब्बत

शेष पृष्ठ.....27 पर

बच्चों की तअलीम व तर्बियत किताब व सुन्नत की रौशनी में

—मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हयि हसनी रह0

मोमिनो! अपने आपको और अपने अहल व अयाल को जहन्नम की आग से बचाओ। (सूरः तहरीमः 6)

और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करो और उस पर काइम रहो। (सूरःताहाः132)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने हुजूर सल्ल0 को कहते हुए सुना कि तुममें हर शख्स ज़िम्मेदार है और हर एक से उसकी जिम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा। हाकिम (शासक) जिम्मेदार है और उससे उसकी जिम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा। औरत अपने शौहर के घर की जिम्मेदार है और उससे उसकी जिम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा। खादिम अपने आका के माल का रखवाला है, उससे उसके मुतअल्लिक सवाल होगा, गरज़ तुममें का हर शख्स जिम्मेदार है, उससे उसकी जिम्मेदारी के बारे में सवाल होगा। (मुत्तफक़ अलैह)

हज़रत अबूहुरैह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत हसन बिन अली रज़ि0 ने सदके का एक खजूर उठा कर अपने मुँह में डाल लिया, हुजूर सल्ल0 ने फरमाया नहीं—नहीं इसको थूक दो, तुम को मालूम नहीं कि हम लोग सदके का माल नहीं खाते। (मुत्तफक अलैह)

हज़रत उमर बिन अबी सलमा रज़ि0 से रिवायत है कि मैं हुजूर सल्ल0 की जेरे परवरिश एक बच्चा था, मेरा हाथ प्लेट में चारों ओर जाता था, हुजूर सल्ल0 ने फरमाया बच्चे! बिस्मिल्लाह करके खाओ, दाहिने हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ। (मुत्तफक अलैह)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया कि सात साल कि उम्र में अपने बच्चों को नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो और जब दस साल के हो जायें तो नमाज़ छोड़ने पर उनको सजा दो (मारो) और उनको अलग कर दो (यानी दस साल के दो बच्चे एक बिस्तर पर न सोएं)। (अबू दाऊद)

हज़रत जाबिर बिन समरह रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया कि आदमी अपने बच्चे को अदब सिखाए यह इस बात से बेहतर है कि एक साअ़ (लगभग तीन किलो) सदका करे। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अय्यूब बिन मूसा अपने दादा के वास्ते से हुजूर सल्ल0 से रिवायत करते हैं कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया, कोई बाप अपने लड़के को अच्छी तहज़ीब व अदब से बेहतर कोई और चीज़ नहीं देता (तिर्मिज़ी)।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया, जिसकी लड़की पैदा हो और वह उसको जिन्दा न गाड़े और न उस पर अपने लड़के को तरजीह दे तो अल्लाह तआला उसको जन्नत में दाखिल फरमाएंगे। (अबू दाऊद)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया, जिसने दो लड़कियों की परवरिश की, यहाँ तक कि वह बालिग़ हो गईं तो कियामत के दिन मैं और वह साथ—साथ आएंगे, आपने अपनी उंगलियों को मिला कर बताया कि इस तरह साथ होंगे। (मुस्लिम)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया, जिसने तीन लड़कियों की परवरिश की, उनको अदब व तहज़ीब सिखाया, शादी कर दी, अगर उनके साथ हुस्ने सुलूक किया तो वह जन्नत में दाखिल होगा। (अबूदाऊद)

हज़रत सुराक़ा बिन मालिक से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया कि क्या मैं तुमको बेहतरीन सदका न बता दूँ, तुम्हारी बेटी तुम्हारे ही जिम्मे है, तुम्हारे सिवा उसके लिए कमाने वाला कोई और नहीं है। (इब्ने माजा)

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि0 से रिवायत है कि उनके वालिद उनको लेकर हुजूर सल्ल0 की खिदमत में हाजिर हुए और फरमाया, मैंने अपने इस लड़के को अपना एक गुलाम दे दिया, हुजूर सल्ल0 ने पूछा क्या, अपने सब लड़कों के साथ ऐसा ही किया है? वालिद साहब ने अर्ज किया नहीं, तब हुजूर सल्ल0 ने फरमाया : अल्लाह से डरो और अपनी औलाद में इन्साफ करो, मेरे वालिद खिदमते अकदस से वापस आए और ये सदक़ा (गुलाम) वापस ले लिया।

(मुत्तफक अलैह)

❑❑

बेहयाई का सैलाब.....

बच्चे और खुद आप इस तबाह करने वाली बीमारी से सुरक्षित रहें। आज जबकि आप ही की बहनें अपनी पूरी ताक़त और कुव्वत बेदीनी और बदअख़लाक़ी को फैलाने में ख़र्च कर रही हैं, क्या इस सूरत में दीन व अख़लाक़ की कोई ज़िम्मेदारी लागू नहीं होती। अगर आप के नज़दीक बेदीनी और बदअख़लाक़ी प्लेग से ज़्यादा अधिक घातक है, अगर आप ये समझतीं हैं कि बेदीनी और बदअख़लाक़ी आप के घरानों और बच्चों को तबाह कर रही है, अगर उन दोनों के परिणाम और हानिकारक परिणाम आप महसूस करती हैं तो इस पर ख़ामोश रहना और अपनी ताक़त और कुव्वत को बेकार रखना बड़ा दीनी और अख़लाक़ी जुर्म है। जिसका नतीजा ये होगा कि ये तूफ़ान आपकी ज़िन्दगी के सुकून व क़रार को तबाह कर देगा और वक़्त गुज़रने के बाद केवल पछताने के हाथ कुछ न आयेगा। अभी आप बहुत कुछ कर सकती हैं। आप की बात सुनी जा सकती है। आपकी कोशिश रंग ला सकती है। याद रखिए ये बीमारी केवल क़लम या केवल ज़बान या केवल मिलने–जुलने से दूर नहीं होती है। सबसे पहला काम ये है कि खुद आप उन तरीक़ों से और उन कामों से बचें जो बेदीनी और बदअख़लाक़ी की तरफ़ ले जाते हैं। अपने आमाल और किरदार, अपने अख़लाक़ व समाज से ये साबित करें कि दीन व अख़लाक़, हया व शराफ़त ही औरत का जौहर है। वो बहनें बेदीनी, बदअख़लाक़ी की ज़िम्मेदार हैं जो बाज़ारों, पार्कों, आम जगह में पर्दे में रहकर अपनी बेपर्दगी को प्रकट करती फिरती हैं। फिल्मी मैग्ज़ीनों को अपने घरों में घुसने से नहीं रोकतीं, महफ़िलों में आज़ादाना हालत की पहरेदारी नहीं करतीं। अगर आपको अल्लाह ने क़लम की ताक़त दी है तो कलम से, ज़बान की ताकत दी है तो ज़बान से और अपने अमल और कोशिश से बेदीनी और बदअख़लाक़ी के बढ़ते हुए सैलाब को रोकें, वो समय बहुत क़रीब है कि आप की ग़फ़लत व कोताही या ख़ामोशी से दीन व अख़लाक़ का बांध टूट जाएगा और कोई घर इस सैलाब से सुरक्षित न रह सकेगा बल्कि तिनके की तरह इस सैलाब में बह जाएगा।

❑❑

नव युवकों के लिए आश्चर्यजनक

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

1939 ई0 में मुझे प्रेप्रेट्री स्कूल में प्रवेश दिलाया गया, विश्व महायुद्ध छिड़ चुका था, जिस के कारण मंहगाई आरम्भ हो चुकी थी। उस समय एक रूपये में 16 आने होते थे और 12 पाई का एक आना होता था, एक आने में चार पैसे होते थे, पैसा तांबे का सिक्का होता था जो आजकल के रूपये के बराबर होता था, आधा पैसा भी चलता था जिसे अधेला कहते थे, वह साइज़ और वज़न में पैसे का आधा होता था। दुकानों पर अधेले का सौदा आसानी से मिल जाता था, अधेले का आधा छिदाम भी मौजूद था और पैसे का तिहाई वाला सिक्का पाई कहलाता था, पाई और छिदाम में बहुत थोड़ा फर्क था। मंहगाई हो जाने के कारण एक दस्ता कागज़ चार आने का मिलता था, जिसमें 24 शीट कागज़ होता था, पेंसिल मंहगी हो कर एक आने की मिलने लगी थी, निब एक पैसे की, रबर एक पैसे का, कापी एक आने की, पटरी (स्केल) बांस की एक आने की। सोम, चहारुम (तीसरे–चौथे) दर्जे की किताबें, कापियां और ज़रूरी सामान 2 या ढाई रूपये में मिल जाता। देहातों में रौशनाई की टिकिया मिलती थी, काली या नीली एक पैसे में चार टिकिया मिलती थी। बाजार में कांच की दवातें मिलतीं, उन में रौशनाई घोली जाती, उसमें छोटा सा कपड़ा डालना ज़रूरी होता। देहात और कस्बात में न फाउन्टेन पेन था न बनी बनाई घुली इंक। मिडिल तक सेंठे (कंडे) के कलम से लिखने का रवाज था। केवल अंग्रेज़ी होल्डर में निब लगा कर लिखना होता था, उसके लिए जी निब खास थी। कुछ विद्यार्थी हिसाब (गणित) का काम भी निब से करते थे।

सरकारी प्राइमरी स्कूलों में मासिक शुल्क (फीस) एक आने से अधिक न होता, मिडिल स्कूल में स्वतंत्रता (आज़ादी) प्राप्त करने तक मिडिल स्कूल की फीस आठ आने (आधा रूपया) थी, अलबत्ता अंग्रेज़ी पढ़ने वालों से डेढ रूपया फीस ली जाती थी। सरकारी टीचरों की तन्ख्वाहें 30 से 50 रूपये तक होतीं। देहातों और कस्बात में 10, 15 रूपये महीना पर नौकर मिल जाते, 1944–1945 ई0 तक खेत में काम करने का हलवाहा चार रूपया माहवार पर मिल जाता, अलबत्ता पन पियाव के नाम पर उसे एक पाव मकई या चना देना पड़ता। देहातों में आम तौर से मजदूर एक रूपये में आठ रोज़ काम करता था।

खेती पुराने ढंग से चली आ रही थी, अनाज की पैदावार बहुत कम थी, एक पक्के बीघे में अधिक से अधिक 10 मन गेहूँ या चना पैदा होता। आठ फिट तीन इंच का एक लटठा होता, एक लट्ठा चौड़ा, एक लट्ठा लम्बा खेत एक बिस्वांसी होता, 20 बिस्वांसी का एक बिस्वा होता और 20 बिस्वा का एक बीघा। एक पक्के बीघे में ढाई कच्चे बीघे होते थे, आज एक एक पक्के बीघे में कम से कम दस कुन्टल गेहूँ पैदा किया जाता है, उस समय कम अनाज होने पर भी अनाज की कमी न होती थी।

उस समय तौलने के पैमानों में रत्ती, माशा, तोला से सोना आदि तौले जाते थे और सेर, छटांक, मन, टन से भारी चीजों को तौला जाता था। जिनका हिसाब इस प्रकार था:

8 चावल=एक रत्ती, 8 रत्ती= एक माशा (लगभग एक ग्राम) 12 माशा=एक तोला, 5 तोला= एक छटांक, 16 छटांक=एक सेर, 40 सेर=एक मन। सेर में 80 तोले होते थे, जब कि एक किलो में लगभग 86 तोले होते हैं। नापने वाले पैमाने इंच, फिट और गज होते। 12 इंच= एक फिट, तीन फिट=एक गज। स्कूलों में तोला, माशा, रत्ती, मन, सेर, छटांक, इंच, फिट, गज, घण्टा, मिनट, सेकेण्ड के हिसाब लगवाए जाते और इमतिहानात में जरा सी चूक पर सारी मेहनत अकारत जाती और अच्छा खासा तेज विद्यार्थी रो देता।

1942, 1943 ई0 तक एक रूपये में चना, जौ, 10 सेर, गेहूँ चार सेर, और चावल तीन सेर मिलता रहा, 1944 ई0 तक मैं खुद अपने बाज़ उस्तादों को एक रूपये में 6 छटांक (350 ग्राम) घी खरीद कर पहुंचाता रहा, दूध एक रूपये में चार सेर तक मिल जाता। सन् 1942 ई0 तक गुड तीन पैसे सेर था। देहाती मेलों में गुड़ की जलेबी दो पैसे पाव और शकर की जलेबी एक आने पाव थी। मिठाइयां देसी घी में बनती थीं या सरसों के तेल में। 1943 ई0 तक देहात और कस्बात में लोग डालडा से परिचित न थे। देहातों में गुड़ और राब खाने का रवाज था, शकर कोई-कोई इस्तेमाल करता। खूब याद है कि 1942 ई0 तक देहातों मे शबेबरात का हलवा, ईदैन की मिक्स सिवय्याँ, गुड़ की होती थीं। 1942 ई0 तक कस्बात में भैंस का गोश्त दो आने सेर, बकरे का गोश्त एक रूपया सेर था। सिक्कों में जैसा पीछे गुजरा पाई, छिदाम, अधेला और पैसा, यह तांबे के थे, याद नहीं किस सन् में अधन्ना (आधा आना) भी चला था, इकन्नी, दुवन्नी गिलट की होती, चवन्नी, अठन्नी और रूपया चांदी के सिक्के होते, बाद में याद नहीं कि चाँदी की चवन्नी, अठन्नी कब बन्द हो गई, यह भी याद न रहा कि चाँदी का रूपया कब बन्द हुआ।

देहातों में भैंस पालने का बड़ा रवाज था, दूध पका कर, जमा कर घी निकाला जाता, यह घी बेचा जाता, उससे भैंस वाले की जरूरियात पूरी होती। घर वाले मट्ठा खाते और पड़ोसी को भी भेजते। देहातों में मट्ठा बेचने वाला कंजूस कहलाता, खुद खाता दूसरों को खिलाता। तुख्मी आमों (देशी आमों) के बड़े-बड़े बागात थे। देहात के लोग (मलीहाबाद और उसके आस पास को छोड़ कर) कल्मी आमों से महरूम (वंचित) थे मगर तुख्मी आम खाने से न चुकता।

मेरे बेटों पोतों मेरे प्रिय नव युवकों! आप सब अवश्य ही आश्चर्य में पड़ जाएंगे, मैं भी यह सब सोच कर याद करता हूँ तो सीने पर साँप सा लोट जाता है। ❑❑

हज़रत नाज़िम साहब.....

रखें। अल्लाह तआला कोशिश देखता है और उस पर अज्र देता है। अल्लाह तआला ने नबी सल्ल0 से फरमाया कि कह दो कि तुम अगर अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी इत्तिबाअ (पैरवी) करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा।

❖❖❖

क़ौम कब सुधरेगी

—इदारा

हाफिज़ तुफैल अहमद अन्सारी ने मदरसा अबू अहमदिया, आलियाबाद जिला बाराबंकी में हिफ्ज़ पूरा किया, दीन की जरूरी बातें भी सीखीं। उनके कुछ अजीज फैजाबाद जिले के एक गांव में रहते थे, वह हाफिज़ तुफैल को अपने गांव की मस्जिद में इमामत करने और बच्चों को कुर्आन मजीद पढ़ाने के लिए ले गये। जब हाफिज तुफैल उस गांव में पहुंचे तो गांव के दस बारह लोग जमा हुए और हाफिज़ जी से मांग की कि आप मौलाना अशरफ अली थानवी और मौलाना अब्दुश्शकूर लखनवी को काफिर कहें तभी आप हम लोगों के इमाम हो सकते हैं। हाफिज तुफैल ने कहा, आपको चाहिए था कि मुझसे कुर्आन शरीफ सुनते, मुझसे कल्म–ए–तय्यबा और कल्म–ए–शहादत पढ़वाते, उसके माना मालूम करते। ईमाने मुजमल और ईमाने मुफस्सल सुनते, उनके माने पूछते, यह क्या कि किसी को मुझ से काफिर कहलवा रहे हो? लोगों ने कहा, नहीं पहले आपको इन दोनों आलिमों को काफिर कहना होगा। हाफिज जी ने कहा मेरे भाइयो! मैं ज़्यादा पढ़ा नहीं हूँ, मगर दीन की जरूरी बातें जानता हूँ और जो जानता हूँ उस पर अमल करता हूँ। मेरी जानकारी में मौलाना अशरफ अली थानवी ने बहुत सी दीनी किताबें लिखी हैं, उनकी बहिश्ती जेवर हमारे घरों में पढ़ी जाती है, उन्होंने कुर्आन शरीफ की तफ्सीर बयानुल कुर्आन लिखी है, वह तो अल्लाह वाले थे, हम उनको काफिर नहीं कह सकते। इसी तरह मौलाना अब्दुश्शकूर साहब की नफह–ए–अंबरीया ब ज़िक्रे मीलादे खैरूलबरीया मैंने पढ़ी है, उनकी इल्मुल फिक्ह पूरी पढ़ी तो नहीं है मगर दूसरा हिस्सा नमाज़ वाला पढ़ा है। उनकी सीरत खुलफाए राशिदीन पढ़ी है, वह बड़े बुजुर्ग आदमी हैं, उनको मैं काफिर कह कर अपनी आखिरत नहीं बर्बाद कर सकता। लोगों ने कहा, यहां आपके खाने–रहने का बड़ा अच्छा इन्तिज़ाम होगा, तन्ख्वाह अच्छी हो जाएगी जबकि आप उन दोनों पर लानत पढ़िये। ईमान के पुख्ता हाफिज़ ने अल्लाह की तौफीक़ से कहा, मैं आपकी तन्ख़्वाह और अच्छे खाने–रहने की सुहूलत पर लानत भेजता हूँ, मुझे अपने घर वापस जाने दीजिए, मैं करघा चला कर रोजी कमा लूँगा मगर ऐसी नौकरी पर लानत भेजता हूँ। करीब था कि गांव के लोग हाफिज़ जी को मारते लेकिन अजीज़ की मौजूदगी में मार खाने से बच गये, और अपने घर वापस आ गये, फिर जल्द ही हाफिज जी को दूसरे गांव के लोग बुला ले गये, वह वहां बा इज़्ज़त इमामत भी करते रहे और बच्चों को कुर्आन शरीफ की तअलीम भी देते रहे, कई साल हुआ हाफिज़ जी अल्लाह की रहमत में जा बसे।

❖❖❖

हज के बाद हुज्जाजे किराम की ज़िम्मेदारियाँ

—मौ0 सै0 मुहम्मद हमजा हसनी नदवी

अल्लाह का शुक्र व एहसान है कि हमारे बहुत से खुश किस्मत भाई—बहन हज की अदाएगी करके और अपने गुनाहों और गलतियों से पाक होकर अपने घर पहुंच चुके हैं, अल्लाह तआला उनके हज को कबूल फरमाए और उनको मुबारक करे। अल्लाह तआला के मेहमान हज की बरकतें वसूल करके अपने अहल व अयाल से मुलाकात करके अपनी आँखें ठण्डी कर रहे हैं।

मदीना मुनव्वरा का कियाम और बार—बार रौज—ए—अक़दस पर दुरूद व सलाम पेश करने की सआदत हासिल करके अपने कल्ब व रूह को रोज़—ए—अक़दस की जियारत से मुनव्वर करके उनकी किस्मत को चमका देने वाला यह सफर अलहम्दुलिल्लाह खैर व आफीयत तमाम हुआ।

एक तो सफर में दुआएं कबूल होती हैं और फिर हज के मुबारक सफर में दुआओं की क़बूलियत में क्या शुब्हा रह जाता है, मालिकुल मुल्क, अरहमुर्राहिमीन का दरबार खुला हुआ हो और बन्दों के हाथ फैले हुए हों, जबानें अपने रब से भीख मांग रही हों तो क्या मांगने वालों का दामन खाली रह सकता है? अल्लाह तआला का यह भिखारी खाली दामन और खाली हाथ वापस आ सकता है? हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं।

अल्लाह तआला के घर और रसूलुल्लाह सल्ल0 के दर से कामयाब लौटने वाले अब सोचो कि तुम पर अल्लाह तआला का कितना बड़ा फ़ज़्ल व करम हुआ है और अब तुम्हारी क्या जिम्मेदारियाँ हैं? अब तुम्हारी ज़िन्दगी किस तरह गुज़रनी चाहिए? तुम अगर ताजिर हो तो अब तुम्हारी तिजारत कैसी होनी चाहिए? मुलाजिमत पेशा हो तो तुम्हारा क्या तर्ज़े अमल होना चाहिए? किसान हो तो तुम्हारा क्या बर्ताव होना चाहिए?

शरीअत की पाबन्दी, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 के हुक्मों पर सरे तस्लीम ख़म करना तुम्हारी पहचान होनी चाहिए, अपनी मर्जी को अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्ल0 की मर्जी में ढाल देना चाहिए और अपने सुब्ह व शाम जिक्र व तिलावत से आबाद करना चाहिए, अपने अजीज़ों, पड़ोसियों और मिलने वालों के साथ हमदर्दी और हुस्ने सुलूक करना अपना तरीका होना चाहिए, बड़ों का लिहाज, छोटों पर शफक़त करना चाहिए, गरीब मुसलमानों की फिक्र और उनके मसाइल को हल करना चाहिए, दीनी व इस्लामी खिदमात में अपने औकात सर्फ करना चाहिए।

यह है हज का पैगाम जिस पर अमल करके हमारी जिन्दगी कामयाब हो सकती है।

❖❖❖

आदर्श शासक

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

चौदह सदी पहले की बात है। मदीने में दूसरे देश का एक जाजूस आया कि देखें, यहाँ के लोग कैसे हैं और प्रशासनिक व्यवस्था तथा प्रशासक कैसा है? बताता चलूँ कि ये हज़रत उमर रज़ि0 के शासन काल की बात है। हज़रत उमर रज़ि0 की कार्य शैली बड़ी सीधी–सादी थी, लेकिन उसका परिणाम बड़ा ही दूरगामी होता था। दूर–दूर तक ये बात फैली थी कि वह देश और जनता के सबसे बड़े सेवक हैं। उस भेदी ने लोगों से टोह ली कि तुम्हारा बादशाह कहाँ रहता है, उसका महल कहां है, उसका सिंहासन और मुकुट कैसा है? लोगों ने कहा, अरे भईया! यहाँ कोई बादशाह–वादशाह नहीं रहता, सुनो! हमारा यहां एक मुखिया है, वह अल्लाह और उसके रसूल के कानून को लागू करता है, वह हम लोगों की देखभाल करता है। भाई! उसका कोई महल–वहल नहीं है। वह एक खेमें में रहता है और मस्जिदे नबवी में बैठ कर प्रशासनिक कार्यों का निबटारा करता है तथा शेष समय अल्लाह–अल्लाह करता है।

उस भेदी ने कहा, भाई! मेरे साथ चलो ताकि तुम्हारे मुखिया की एक झलक देख लूं। उत्तर मिला, अभी–अभी इसी रास्ते से गुज़रे हैं, तुम इसी रास्ते को पकड़ लो। यदि वह जाग रहे होंगे तो रास्ते में किसी काम का निबटारा करते मिल जाएंगे। यदि सो रहे होंगे तो किसी पेड़ की छाया के नीचे देख लेना कि ज़मीन पर लेटे होंगे और बगल में कोड़ा रखा होगा।

जासूस ने उस रास्ते को पकड़ लिया जो उसे बताया गया था। वह भेदी घूमता–फिरता एक पेड़ के नीचे पहुंचा तो देखा कि एक आदमी बड़े मज़े से सो रहा है, न तकिया न बिस्तर, तकिया की जगह कोड़ा रखा हुआ है और ज़मीन मानो बिस्तर है। उसने पास जाकर देखा तो वह हज़रत उमर रज़ि0 थे। भेदी के दिल में ये देख कर एक रौब जम गया। उसने अनगिनत बादशाह और दरबार देखे थे मगर यहाँ तो हाल ही कुछ निराला था, उसने मन ही मन कहा कि अरब और ग़ैर अरब में कौन है जो इनकी महानता और बड़ाई से परिचित न हो मगर इस महानता की मिसाल तो कहीं नहीं मिलती।

इतने में हज़रत उमर रज़ि0 नींद से जागे और अजनबी को देखा तो पूछा, भाई! कौन हो, किस लिए आए हो? उसने सारी बातें कह सुनाईं, फिर बोला मैं सोच रहा हूँ कि आप इतने आराम से कैसे सो जाते हैं? फिर खुद ही बोला, मुझे इसका जवाब मालूम है, आप इन्साफ करते हैं इसलिए बेखौफ सोते हैं, यदि आप अत्याचारी और स्वयं को लाभ पहुँचाने वाले होते तो कभी इस तरह न सो पाते।

अब हम अपने देश के सांसदों–विधायकों आदि को देखें बल्कि गांव–मुहल्ले के सभासदों को देखें जो बिना बॉडी गार्ड के दो कदम चलना

पसन्द नहीं करते। मंत्रियों आदि को अपने कृत्यों के परिणाम से इतना खौफ रहता है कि वह ज़ेट प्लस से लेकर प्लस दर प्लस सुरक्षा के घेरे में रहना पसन्द करते हैं। जबकि हमारे इस्लामी शासकों को इसका भय ही नहीं रहता था क्योंकि उनके अमल से किसी का नुकसान नहीं होता था और वह प्रत्येक स्थान पर सत्य व न्याय का साथ देते थे।

ख़ैर! भेदी ने कहा, अमीरुलमुमेनीन (हज़रत उमर रज़ि0)! मैं गवाही देता हूँ कि आपका धर्म (इस्लाम) सच्चा है। मैं दूत बनकर आया था, इसलिए वतन लौटना ज़रूरी है, कुछ दिनों बाद लौट कर आऊँगा और आपके पवित्र धर्म को स्वीकार कर लूँगा।

मुसलमानों को भी ऐसा बनना चाहिए कि लोग उनके आचार–व्यवहार और नैतिक लेन–देन से प्रभावित होकर इस्लाम लाएं और ग़ैर मुस्लिम भाई भी अपना व्यवहार ऐसा बनाए कि सिसकती इन्सानियत खिलखिला उठे और पशुता की ओर बढ़ती मानवता पर रोक लगे।

❖❖❖

इद्दत एवं सोग के आदेश.....

पर मनहूस समझा जाता था, ख़ास तौर पर हिन्दुस्तान में अगर किसी वजह से सती की रस्म अन्जाम न भी पाये तो उसके दूसरे विवाह को हराम समझा जाता था। इस्लाम ने इन जुल्मों का ख़ात्मा किया। औरत के साथ किये जाने वाले ग़ैर इन्सानी सुलूक का खात्मा किया, शौहर की जुदाई पर ग़म व अफ़सोस ज़ाहिर करने और उसके नसब में एख़तेलात के शुब्हे से बचाने के लिए इद्दत व शोक को आवश्यक घोषित कर दिया। इसलिए इद्दत का वर्णन करते हुए इरशाद हैः (तुम में से जिनकी वफ़ात हो जाए और वो बीवियां छोड़ जावें तो चार महीने 10 दिन इद्दत गुज़ारें)।

इस इद्दत का मकसद क्योंकि नस्ल को घालमेल से बचाने के साथ–साथ सोग भी होता है, अतः ये इद्दत व्यस्क–अव्यस्क सब पर है। चाहे मुलाक़ात हुई हो या न हुई हो। यद्यपि अगर कोई औरत गर्भ से हो और उसके पति की मौत हो जाए तो उसकी इद्दत बच्चा पैदा होने तक है, यहां तक कि इन्तिक़ाल के फ़ौरन बाद बच्चा पैदा हो जाए तब भी उसकी इद्दत ख़त्म हो जाएगी। अगरचे बजाए पूरा बच्चा होने के गर्भ गिर गया हो तब भी उसकी इद्दत पूरी हो जाएगी।

ये औरत भी इद्दत के दौरान सोग मनाएगी और ज़ेब व ज़ीनत के सभी तरीक़ों से बचने की कोशिश करेगी। यद्यपि सर दर्द होने पर तेल लगाने और आंख में तकलीफ़ होने पर सुरमा लगाने की इजाज़त है। उस औरत को खुले तौर पर निकाह का पैग़ाम देना सही नहीं है, बल्कि इशारा से दिया जा सकता हैं।

ये औरत भी उसी मकान में इद्दत गुज़ारेगी जहां शौहर की मौत से पहले रहती थी, केवल किसी मजबूरी से वहां से हट सकती है, मजबूरी की हालत ये है कि शौहर के मकान में उसका हिस्सा रहने के बराबर न हो और दूसरे वारिस अपने हिस्से में न रहने दें या मकान किराये का हो और उसके पास किराया देने की गुंजाइश न हो।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः क्या टेलीफोन से निकाह हो सकता है? अगर हो सकता है तो उसका क्या तरीक़ा होगा?

उत्तरः पहली बात तो यह समझें कि टेलीफोन से निकाह सुन्नत तरीके से बिलकुल हट कर है, लिहाजा सख़्त जरूरत के बिना इसे न अपनाना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि निकाह में दो जुज़ (भाग) अहम होते हैं, ईजाब व कबूल। लड़की का वकील लड़के से जब कहता है कि मैंने फुलां लड़की को इतने महर पर तुम्हारे निकाह में दिया, क्या तुमने क़बूल किया, यह ईजाब है। बालिग़ लड़के ने कहा, मैंने क़बूल किया, इसको क़बूल कहते हैं। लड़का अगर नाबालिग हो तो उसका वली कबूल कर सकता है।

यह ईजाब व क़बूल दो आकिल, बालिग़ मुसलमानों की मौजूदगी में ज़रूरी है।

पस अगर सख़्त जरूरत हो तो लड़की या लड़का टेलीफोन से अपना वकील बना दे, वह वकील, वकील बनाने वाले को जानता और पहचानता हो, महर भी फोन पर तय हो जाये।

अब अगर लड़की के वली ने वकील बनाया है तो वकील दो आकिल, बालिग मुस्लिम गवाहों के सामने कहे कि मैंने फुलाँ बिन्ते फुलां जिसका मैं वकील हूँ को इतने महर पर तुम्हारे निकाह में दिया, इस पर बालिग़ लड़का कहे कि मैंने कबूल किया, अगर लड़का नाबालिग़ हो तो उसका वली कहे, मैंने फुलाँ की तरफ से कबूल किया, बस निकाह हो गया।

इसी तरह अगर बालिग लड़के ने फोन से किसी को अपने निकाह के लिए अपना वकील बनाया, जब कि वकील लड़के को जानता हो और उसको यकीन हो कि उसने मुझे अपना वकील बनाया है, अब वह वकील दो आकिल, बालिग़ मुस्लिम गवाहों के सामने लड़की के वकील से कहे, मैंने इतने महर पर फुलां बिन्ते फुलां को अपने मुवक्किल फुलां बिन फुलां के निकाह में लिया। लड़की का वकील कहे मैंने क़बूल किया, बस निकाह हो गया या लड़की का वकील या शरई वली दो आकिल, बालिग मुस्लिम गवाहों के सामने कहे कि मैंने फुलां बिन्ते फुलां को इतने महर पर फुलां बिन फुलां जिसके आप वकील हैं के निकाह में दिया, वकील कहे मैंने क़बूल किया, बस निकाह हो गया।

ईजाब व क़बूल दो आकिल, बालिग मुस्लिम गवाहों की मौजूदगी में एक ही मजलिस में होना चाहिए और सुन्नत के मुताबिक़ खुत्बा भी पढ़ा जाना चाहिए। शामी वगैरह में इसकी तफ्सील मौजूद है।

प्रश्नः क्या खत के ज़रिए निकाह हो सकता है?

उत्तरः सख़्त ज़रूरत पर खत के जरिए निकाह वैसे ही हो सकता है जैसे टेलीफोन से, पिछले प्रश्न का उत्तर पढ़ लें। अर्थात लड़का या लड़की खत लिख कर किसी को अपने निकाह का वकील बना दे, फिर कम से कम दो आकिल, बालिग

मुसलमानों की मौजूदगी में ईजाब व कबूल हो और उसी सुन्नत के मुताबिक खुत्बा भी पढ़ा जाए।

प्रश्नः अदालती निकाह का क्या हुक्म है?

उत्तरः अदालती निकाह में बालिग़ लड़का और बालिग़ लड़की एक फार्म पर या तहरीर में जज के सामने मियां–बीवी होने के इक़रार पर दस्तखत कर देते हैं, इसमें शरई ईजाब व क़बूल नहीं पाया जाता, लिहाज़ा मुल्क़ के क़ानून में तो वह मियां–बीवी हो गये मगर शरीअत में वह मियां–बीवी नहीं हुए, उनको चाहिए कि अदालती निकाह के बाद कम से कम दो आकिल, बालिग़ मुसलमानों के सामने या एक आकिल बालिग मुसलमान और दो आकिल, बालिग औरतों के सामने शरई ईजाब व कबूल कर ले, यानी लड़का लड़की से कहे, मैंने इतने महर पर तुम को अपने निकाह में लिया, लड़की उसी मजलिस में कहे, मैंने क़बूल किया या इसका उल्टा लड़की कहे मैंने इतने महर पर अपने को आपके निकाह में दिया (लड़के को मुखातब कर के कहे) लड़का कहे, मैंने कबूल किया, इतना कर लेने से दोनों कानूनी मियां–बीवी थे ही अब इस्लामी शरीअत में भी मियां–बीवी हो गये।

प्रश्नः हमारे यहां रवाज है कि जब दुल्हन रुख्सत हो कर आती है तो मुँह दिखाई की रस्म अदा होती है। तमाम रिश्तेदार औरतें दुल्हन का मुँह देख कर उसको कुछ नक्द या जेवर वगैरह पेश करती हैं, बाज़ करीबी मर्द भी दुल्हन का मुंह देख कर उसे हदिया पेश करते हैं, इस रस्म का क्या हुक्म है?

उत्तरः इब्लीस ने तो कसम खा रखी है कि आदम की औलाद को राहे हक़ से भटकाता रहेगा, यह रस्म भी उसी मलऊन ने जारी कर रखी है। इसकी शुरुआत तो यूँ हुई होगी कि किसी बड़ी बूढ़ी ने दुल्हन को देख कर दुआएं दी होंगी और उसे खुश करने के लिए बतौर इनआम कुछ अता किया होगा। यहाँ तक तो कोई हरज की बात न थी लेकिन यह एक वक्ती अमल था, इसकी तक्लीद नहीं होनी चाहिए थी लेकिन वाह रे शैतान! इसको ऐसा जारी किया कि अगर कोई रिश्तेदार औरत मुंह दिखाई न दे तो उस पर उंगलियां उठती हैं। फिर दुल्हन की सास को इसे याद रखना पड़ता है कि किसने क्या दिया, फिर देने वाले के यहां की तकरीब (पर्व) में इसका बदला करना होता है, इस रस्म को बन्द होना चाहिए। जिन दीनदारों को अल्लाह तौफीक़ दे इस रस्म को खत्म करें, रही बात दुल्हन का मुँह मर्द देखे यह तो बहुत ही खराब बात है, और अगर देवर या कोई और गैर महरम देखे तो हराम है और बड़ा गुनाह है, अल्लाह तआला ऐसी बुरी रस्म से महफूज रखे।

प्रश्नः हमारे यहां जब दुल्हन रुख्सत होती है तो दूल्हा, दुल्हन की सवारी के ऊपर से धान के लावे उछालते हैं, फिर दुल्हन या उसके घर वाले कुछ सिक्के लुटाते हैं इस का क्या हुक्म है?

उत्तरः यह खालिस गैर इस्लामी रस्म है इसका तर्क करना (छोड़ना) ज़रूरी है।

प्रश्नः हमारे यहां रस्म है कि निकाह और खाने वगैरह से फारिग़ होने के बाद दूल्हा को दुल्हन के घर के अन्दर बुलाया जाता है, दुल्हा अपने दोस्तों के साथ अन्दर जाता है, उसे एक पलंग पर बिठा कर एक

शेष पृष्ठ.....39 पर

शरद ऋतु

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

एक बार फिर मौसम की एक करवट, न जाने कितनी चीज़ों को अपने साथ ले आई है। भोर होते ही लोगों की निंद्रा भंग करने वाले पपीहे की आवाज़ में ठिठुरन आ गई है। सुबह–सुबह का पनीला कुहासा सूरज से आँखें मिलाने लगा है लेकिन फिर भी वह गुनगुनी धूप के रूप में अपना अस्तित्व बचाने में कामयाब है। इधर दोपहर की मंद आँच को रह–रह कर सहलाती सर्द हवाओं की खुनकी लोगों को शायर व अदीब बना रही है। समाँ कुछ ऐसा है कि सब्ज़ियों ने ठण्डी मुस्कान ओढ़ ली है। जबकि गेहूँ–सरसों यौवन के दहलीज़ पर पाँव रखने के लिए उतावले हैं। मौसमी फलों ने स्वाद–सुगंध की खिड़की खोल दी है। अमरूद भी शबनमी आंचल में लिपटा ललचा रहा है। उबले सिंघाड़ों का सोंधापन दीवाना बना रहा है। बालू की आंच में गर्माई मूँगफली लोगों के नथुनों में अपनी खांटी महक भर रही है और उसके साथ हरी चटनी की चटक तथा उसकी शोख अदाएं ये तय ही नहीं कर पा रही हैं कि लइया–चना संग जाएं या मूंगफली की गोद हरी करें। लेकिन इन सबके बीच कुछ टीस भी है। अब देखो न! शीत ऋतु आई मगर मौसम की दस्तक देने वाले पहरूए अब दिखाई नहीं देते, अर्थात गली–गली घूमने वाले धुनकी और रुई धुनते समय धुर्र–धुर्र की आवाज़ बीते कल की बात बन चुकी है। बिल्कुल वैसे ही जैसे गृहणियों और युवतियों के हाथों से स्वेटर बुनने वाली सलाइयाँ। बेचारे धुनकी तो सिंथेटिक रज़ाइयों व कारखानों में बुने कम्बलों से हार गए और हाथ के स्वेटर मशीनों से। ❑❑

२६ जनवरी

—इदारा

दिन है यह जम्हूर का
भारत के दस्तूर का
हाकिम और महकूम का
नौकर और मज़दूर का
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हक़्क़ जहाँ हो ज़िन्दाबाद
भारत अब आज़ाद है
सबका दिल याँ शाद है
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
सब का अच्छा साथ है
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हक़्क़ जहाँ हो ज़िन्दाबाद
मन्दिर, मस्जिद, गिरजा यां
हिन्दी, उर्दू, इंग्लिश यां
भारत में है जो भी ज़बाँ
मिली है सबको यहाँ अमाँ
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हक़्क़ जहाँ हो ज़िन्दाबाद
बुरा भला तो सब ही आँकें
लेकिन रब को ना पहचानें
कैसे सुधरें बोले वह जो
दुनिया ही को सब कुछ जानें
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हक़्क़ जहाँ हो ज़िन्दाबाद
है दस्तूर जभी यह अच्छा
हर बन्दा हो रब से डरता
खौफे ख़ुदा बिन अम्न न होगा
लिख लो तुम यह जुम्ला सच्चा
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हक़्क़ जहाँ हो ज़िन्दाबाद

❑❑

'वन्दे मातरम्' की वास्तविकता और मुसलमान

—जीनियस ख़ान

अन्ना हज़ारे की टीम ने 'वन्दे मातरम्' के अंधाधुन नारे लगाकर एक बार फिर इसके औचित्य का मुद्दा उठा दिया है। 'वन्दे मातरम्' जिस मानसिकता का परिचायक है वह पूर्णतः मुस्लिम विरोधी है। यही कारण है कि मुसलमान अन्ना हज़ारे के आन्दोलन से अधिक नहीं जुड़े। अन्ना हज़ारे पर संघी होने के जो आरोप लगे, उनमें निश्चय ही उनका नारा एक कारक के रूप में है।

इस्लाम केवल एक ईश्वर की वन्दना की अनुमति देता है और किसी की भी नहीं, इसलिए देशवासियों के समक्ष इस्लामी दृष्टिकोण रखना वर्तमान समय की अत्यंत आवश्यकता है, ताकि भ्रांतियों का निवारण हो सके और लोग इस्लामी दृष्टिकोण से अवगत हो सकें जिससे देश में राष्ट्रीय एकता और अखंडता का वातावरण निर्मित हो।

धार्मिक दृष्टि से इस्लाम की बुनियाद तौहीद (एकेश्वरवाद) पर आधारित है। इस्लाम का जो कलिमा (मूलमंत्र) है वह "ला इलाह इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" है जिसका अर्थ है कि "नहीं कोई पूज्यनीय व वंदनीय एक ईश्वर के अतिरिक्त और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 उसके संदेशवाहक हैं"। इसलिए इस्लाम में एक ईश्वर के अतिरिक्त किसी की भी बन्दगी (वंदना) नहीं की जा सकती है। चाहे वह ईश्वर के संदेशवाहक पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ही क्यों न हों? एक ईश्वर के अनुसार ईश्वर अपने भक्त का हर पाप क्षमा कर सकता है मगर शिर्क एक ऐसा घोर पाप है जिसके करने वाले को ईश्वर कभी भी क्षमा नहीं करेगा। इसलिए हर मुसलमान शिर्क जैसे घोर पाप से बचना चाहता है क्योंकि इस पर उसका ईमान निर्भर है।

इस्लाम में भारत भूमि सहित पूरी कायनात का पैदा करने वाला तथा उसे चलाने वाला एक ईश्वर (अल्लाह) ही पूज्यनीय एवं वंदनीय है और कोई नहीं। इस बात का समर्थन वैदिक धर्म के ग्रंथ वेद भी करते हैं। ऋग्वेद में है: "जो ईश्वर समस्त मानव संसार का एक ही उपास्य है उसी का इन वाणियों द्वारा भली–भांति अर्चना करो, वही सुख की वर्षा करने वाला सर्वशक्तिमान, सत्यरूप, सर्वज्ञ और समस्त शक्तियों का अधिपति" है।

ऋग्वेद में एक जगह और आता है कि: "जो ईश्वर एक ही है, तू उसी की स्तुति कर, वह सब मनुष्यों का सर्वद्रष्टा– सर्वज्ञ है। सुख की वर्षा करने वाला संपूर्ण संसार का एक मात्र अधिपति है।

यजुर्वेद में है कि: अंधकार में प्रविष्ट होते हैं जो प्रकृति की पूजा करते हैं।

वेद वाणी का प्रभाव दूसरे ग्रंथों पर भी कुछ न कुछ पड़ा है। उदाहरणार्थ शतपथ ब्राह्मण में है– जो दूसरे में ईश्वर बुद्धि करके उपासना करता है वह कुछ भी नहीं जानता है, इसलिए वह विद्वानों के बीच में पशु के समान है।

अथर्ववेद में है कि– एक ईश्वर ही स्तुति एवं नमस्कार करने के योग्य है।

मुसलमान अगर वन्दे मातरम् गीत से परहेज़ करते हैं तो उनकी नीयत किसी दूसरे धर्म या वर्ग का विरोध या अपमान

करने की कतई नहीं होती है बल्कि अपने ही धर्म के पालन की भावना ज़्यादा होती है, क्योंकि इस्लाम में शिर्क (ईश्वर के साथ दूसरों को सम्मिलित करना) घोर पाप है, इसके लिए इस्लाम में कोई स्थान नहीं है। भारत का संविधान देश के हर नागरिक को समान अधिकार देता है और हर धर्म के मानने वालों को अपने धर्म का पालन करने एवं उसका प्रचार–प्रसार की स्वतंत्रता प्रदान करता है। इसके पश्चात भी अगर कोई सत्ता के नशे में मस्त होकर अपनी संस्कृति दूसरे धर्म के मानने वालों पर थोपने का प्रयास करता है तो यह भारत के नागरिक की स्वतंत्रता के मूल अधिकार का हनन है। जिस 'आनन्द मठ' उपन्यास में यह गीत है उसमें अंग्रेज़ों के आगमन का स्वागत किया गया है। यहां यह सोचने की बात है कि अंग्रेज़ों का स्वागत करने वाले क्या देश भक्त हो सकते हैं? जिस बंकिमचन्द्र चटर्जी ने 'आनन्द मठ' उपन्यास लिखा था उनकी शिक्षा "हाजी मुहसिन फण्ड" से पूरी हुई थी। बी0ए0 पास करने के बाद उन्होंने जो सिला दिया वह सबके सामने है। जबकि वे जानते थे कि इस्लाम में शिर्क घोर पाप है। वंदे मातरम् गीत के अर्थ से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह दुर्गा माता के लिए है। उनकी भक्ति में गाया गया गीत राष्ट्रगीत कैसे हो जाएगा, यह भी विचार करने की बात है। हमारे देश में राष्ट्रगान के साथ एक राष्ट्रगीत भी है जो कि संसार के अन्य देश में नहीं है। भारत देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी है और इस गीत की भाषा बंग्ला संस्कृत है। भारत के मूल निवासी दलित पिछड़े वर्ग सहित देश के ज़्यादातर लोगों के समझ में इसका अर्थ नहीं आता। पंडित जवाहरलाल नेहरू इसे क़ौमी गीत नहीं मानते थे। सुभाष चन्द्र बोस बंगाली होने के बावजूद इस बंग्ला गीत के विरोधी थे। इंडियन नेशनल कांग्रेस ने इस गीत के कुछ हिस्सों को विवादास्पद और साम्प्रदायिक मानकर हटा दिया था। ऑल इंडिया स्टूडेंट्स यूनियन ने भी यह फ़ैसला किया था यह गीत साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़काता है इसलिए इसे छात्रों के किसी भी कार्यक्रम में गाना ठीक नहीं है ('स्टेट्समेन',12 दिसम्बर 1938 ई0)।

आख़िर में मैं अपने प्रिय देशवासियों के नाम एक संदेश देना चाहूंगा कि मुसलमान अपनी पैदा करने वाली मां को न तो पूज्य कहकर संबोधित करते हैं और न ही चरण स्पर्श करते हैं, जबकि पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के कथन के अनुसार माँ के चरणों में जन्नत है तो क्या वह अपनी माँ से प्यार नहीं करते? मुसलमान भले ही वन्दे मातरम् से परहेज़ करते हों क्योंकि उसमें शिर्क के अंश हैं लेकिन अपने राष्ट्र से अगाध प्रेम करते हैं। ऐसी कितनी मिसालें हैं जैसे ब्रिगेडियर मुहम्मद उस्मान और परमवीर चक्र से सम्मानित अमेरिकी पेटेंट टैंक तोड़ने वाले हवलदार अब्दुल हमीद, ब्लैक कमांडो अल्लाह रक्खा अपने देश के लिए अपनी जान का नज़राना पेश करते रहते हैं। राष्ट्र प्रेम से ओत–प्रेत लगभग दो दर्जन से अधिक गीत जिसे मुस्लिम शायरों ने फिल्मों के लिए लिखे हैं जो हर वर्ष राष्ट्रीय पर्व व अन्य अवसरों पर बड़े शान से ज़ोर–शोर से बजाया जाता है पर अधिकांश लोग इससे परिचित नहीं हैं कि इतने प्यारे राष्ट्र गीत मुस्लिम शायरों द्वारा लिखित हैं। (मासिक कान्ति से साभार)

❑❑

पवित्र कुर्आन और मुहम्मद सल्ल0 से हमारा सम्बन्ध कैसा हो?

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी —अनु0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

वरिष्ठजनों एवं सम्मानित स्रोतागण! आप लोग यहां उस पवित्र समारोह में उपस्थित हुए हैं जो पवित्र कुर्आन के नाम पर आयोजित किया गया है। एक तो हाफिज़ों के सरों पर समृति चिन्ह के रूप में दस्तार (पगड़ी) बांधी गई है और उसके बाद तज्वीद व क़रात की विद्या से सम्बंध रखने वाले जो लोग हैं, पवित्र कुर्आन के पाठ (तिलावत) से अपने आपको सौभाग्यशालियों में सम्मिलित करेंगे और आप उनकी तिलावत सुन कर स्वयं को भी सौभाग्यशालियों में गिनेंगे, इसलिए कि कुर्आन की तिलावत करना, सुनना दोनों ही पुण्य (सवाब) का कारण है। और जिस दरजे की तिलावत होगी और जिस दरजे की मुहब्बत से और अदब से सुनेंगे उसी दरजे में सवाब पाएंगे। इसलिए कि कुर्आन के सम्बन्ध में आता है कि पढ़ता जा, चढ़ता जा और हर अक्षर पर दस नेकियाँ। ये अल्लाह की असीम कृपा और उपकार है कि जो भी तिलावत करेगा वह पाएगा, क्योंकि एक बात हमारे विद्वानों (उलमा) ने लिखी है कि यदि कोई तिलावत करे और नीयत न हो तब भी सवाब मिलता है। और यदि अच्छी नीयत कर ले तो नूरून अला नूर। लेकिन बुरी नीयत नहीं होनी चाहिए। बुरी नीयत से अपने आप को बचा ले। ये नीयत भी नहीं होनी चाहिए कि दिखावा कर रहे हैं कि लोग अच्छा क़ारी कहेंगे और लोग मेरी क़रात को सुनकर प्रभावित होंगे और मेरा सम्मान करेंगे, और उसी प्रकार दुनियावी फायदे की नीयत नहीं करनी चाहिए। अल्लाह का कलाम (वाणी) है और अल्लाह का ये उपकार है कि उसने अपने कलाम को पढ़ने का मुझे सौभाग्य दिया और अल्लाह ने उस कलाम की बरकतों से मुझे नवाज़ा। इसलिए आम तौर पर ज़ेहन में आता है और कई बार ज़बान पर भी आ जाता है कि कुर्आन के जो हुफ्फाज़ (कंठस्थ कुर्आन याद करने वाले) हैं वह कुर्आन के रक्षक हैं, जो अच्छी आवाज़ वाले हैं वह ये समझ बैठते हैं कि कुर्आन अच्छा पेश करने में हम लोग आगे हैं और कुर्आन को अच्छे अन्दाज़ में पढ़कर हम मानो कुर्आन को अच्छा कर रहे हैं। दोनों बातें मेरे निकट उचित नहीं हैं, उसको उल्टा कर लेना चाहिए कि हुफ्फाज़ कुर्आन के रक्षक नहीं हैं बल्कि कुर्आन उनका रक्षक है। और जो ये समझता है कि हमारी आवाज़ से कुर्आन अच्छा हो रहा है वह भी ग़लत है। कुर्आन उनकी आवाज को अच्छा कर रहा है। इसलिए दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसको ख़राब आवाज़ वाला पढ़े और अच्छा समझा जाए लेकिन तन्हा कुर्आन है कि उसे ख़राब से ख़राब आवाज़ वाला पढ़े तो कुर्आन उसकी आवाज़ की ख़राबी को अच्छा कर देगा, और यदि अच्छी आवाज़ वाला है तो उसे और अधिक अच्छा कर देगा। ये नहीं हुआ कि अच्छी आवाज़ से कुर्आन अच्छा हुआ बल्कि कुर्आन इतना अच्छा है कि आपकी आवाज़ को अच्छा कर दिया। हमारे तमाम हुफ्फाज़ व क़ुर्रा को समझना चाहिए कि कुर्आन हमारा मुहाफिज़ (रक्षक) है और कुर्आन

ने हमारे अन्दर हुस्न पैदा किया है, सुन्दरता को अस्तित्व प्रदान किया है आदि। ये सद्क़ा है कुर्आन का। ये तो मैं ज़ाहिर बता रहा हूँ कि अभी कुर्आन का ज़ाहिर हमारे ज़ाहिर का मुहाफिज़ है। लेकिन जब हम कुर्आन से अपने आप को बातिनी तौर पर जो अल्लाह ने उसके भीतर शक्ति रखी है उससे जोड़ेंगे और उसके लिए मेहनत करेंगे तो फिर ज़ाहिर है कि अल्लाह हमारे दिल को अच्छा कर देगा। अर्थात समस्त जगत में हमारा डंका पिट जाएगा। सारी दुनिया हमारी ताक़त का लोहा मान लेगी। हमारी क़यादत को मान लेगी, उस पर खुश होगी, उस पर फख्र करेगी। आज जो थोड़ा बहुत भरम रह गया है वह अल्फाज़े कुर्आनी से हमारे सम्बन्ध के नतीजे में है कि इतनी बड़ी संख्या मुसलमानों की दिखाई दे रही है, यदि ये ज़ाहिरी तअल्लुक़ भी समाप्त हो गया तो ये भरम भी जाता रहेगा। इसलिए कुर्आन से आप ने और हमने ज़ाहिर का तअल्लुक़ रखा तो अल्लाह ने ज़ाहिर को बचा लिया। लेकिन जब उस कुर्आन से हमारा सम्बन्ध वास्तविक हो जाएगा तो फिर हम उछल जाएंगे और न जाने कहाँ पहुँचेंगे।

आज मुसलमान भी नहीं जानते कि कुर्आन क्या है? कुर्आन तो अजीबो–ग़रीब चीज़ है। अल्लाह ने प्रलय (क़यामत) तक के लिए ये ग्रन्थ हमको दे दिया और केवल ग्रन्थ नहीं बल्कि एक चमत्कार (मुअजिज़ा) भी दे दिया है और ईश्वरीय चमत्कार भी कभी न ओझल होने वाला दिया है। मुअजिज़ा भी ऐसा दिया है कि एक–एक हर्फ उसका मुअजिज़ा है। ज़ेर व ज़बर (मात्रा) भी ईश्वरीय चमत्कार (मुअजिज़ा) है। अतः आज तक न कोई उसको बदल सका है न बदल सकेगा। इसलिए कि अल्लाह ने उसको सुरक्षा घेरे में लिया है और समस्त जगत का उसको रक्षक बना दिया है। इसलिए उसको कोई मिटा नहीं सकता। जो उसको मिटाएगा वह स्वयं मिट जाएगा। जो टकराने की कोशिश करेगा वह चूर–चूर हो जाएगा, जो उसमें परिवर्तन अथवा संशोधन चाहेगा, अल्लाह उसके उल्टा कर रख देगा। उसके मन–मस्तिष्क को विचलित कर उसे नारकीय जीवन जीने पर विवश कर देगा। वह किसी काम का नहीं रह जाएगा।

अल्लाह ने हमें दो नूर दिये हैं–

देखिये! दो चीज़ें दी हैं, और उन दोनों को अल्लाह ने नूर भी कहा है। एक तो कुर्आन है और एक हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का पवित्र व्यक्तित्व। उन दोनों के साथ हमारा सम्बन्ध सही होना चाहिए, और सम्बन्ध का सही मतलब क्या है, ये भी समझना चाहिए। एक तो वह सम्बन्ध है जैसा कि मैंने कहा कि हमने कुर्आन याद कर लिया, कुर्आन पढ़ने वाले बन गए, कुर्आन की तज्वीद वाले बन गए, क़रात वाले बन गए, ये भी अच्छी बात है और अल्लाह उसको बाक़ी रखे और उसकी बरकतों से हमको मालामाल करे। और उस पर परलोक (आख़िरत) में जो पुण्य (सवाब) मिलने वाला है वह हमें दे। लेकिन ये तो अलिफ, बा, है। अलिफ बा, ता, सा, है। जैसे कोई बच्चा अलिफ, बा, ता, सा पढ़ ले और उसको कुछ शब्दों को जोड़ने का ढंग आ जाए। अभी शुरुआत है, उसके आगे उसके अन्दर अर्थ कब आएंगें? जब पूरी इबारत लिखनी आ जाए। ऐसा ही मुआमला कुर्आन का है। कुर्आन की तिलावत आ गई, कुर्आन को याद करना आ गया, लेकिन

कुर्आन में है क्या? ये नहीं मालूम! ये हमारे बच्चे बैठे हुए हैं, उन बेचारों को नहीं मालूम कि कुर्आन है क्या? आज उनको खुशी तो बहुत हो रही है कि मेरे सर पर पगड़ी बाँध दी गई, लेकिन ये दस्तार भी नहीं जानते और कुर्आन को भी नहीं जानते। बस इतना जानते हैं कि हमने इतनी बड़ी किताब याद कर ली है और ये कुर्आन बड़ी महानता (अज़मत) वाला है। उससे अधिक नहीं जानते। आवश्यकता इस बात की है कि याद करने वाले भी जाने और जो सामने बैठे हुए हैं वह भी जाने कि कुर्आन क्या है? अल्लाह ने उसके अन्दर क्या रखा है?। ❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

सेनी में गरी का गोला रख कर पेश किया जाता है, दूल्हा अपने चाकू से गरी के दो टुकड़े करता है, इस सिलसिले में कई रस्में अदा होती हैं, गरी काटने से पहले सेनी में रूपये डाले जाते हैं, यह रूपये भी मुंह दिखाई की तरह बदले के होते हैं, साली जूते चुरा कर इनआम लेती है, दूल्हे मियां गैर महरम, बे पर्दा औरतों के घेरे में होते हैं, आखिर में दुल्हे मियां सलाम करके इनआम लेते हैं, इस गरी कटाई रस्म का क्या हुक्म है?

उत्तरः यह मजकूरा गरी कटाई और उससे मुतअल्लिक तमाम रस्में हराम हैं, ना जाइज हैं, हदीस में आता है कि तुम में जो कोई नाजाइज़ काम देखे हाथ से रोक दे, यह बस में न हो तो ज़बान से उसकी बुराई बयान करे, यह भी न हो तो दिल में बुरा माने और ये सबसे कमज़ोर ईमान है। बस ईमान वालों को चाहिए कि इस रस्म को बिल्कुल बन्द करें। हां! अगर ससुराल वालों ने पहले से दामाद को न देखा हो तो वह दामाद को बुला कर देख सकते हैं और मौसम के लेहाज से शरबत या चाय पेश कर सकते हैं, जबकि दूसरी औरतें दुल्हे के सामने बे पर्दा हो कर न आयें। इतने में कोई हरज़ नहीं, मगर इसे भी रस्म न बना लिया जाए कि दूल्हे से सब वाकिफ हैं, अब बे ज़रूरत रस्म की अदाएगी के लिए उसे अन्दर औरतों के मज्मे में बुलाया जाए। अल्लाह तआला समझ दे और अपनी मर्ज़ियात पर चलाये, आमीन। ❑❑

अक़ाइद मंज़ूम

(इस्लामी विश्वास संक्षिप्त में)

—मौ0 फतह मुहम्मद लखनवी

खुदा एक है दिल से जानो यकीं
सिवा उसके माबूद कोई नहीं
हर एक शै पे हाकिम व कादिर है वो
हर एक जा पे हाजिर व नाज़िर है वो
उसी ने किया खल्क हर ख़ैर व शर
नहीं फ़ेले बद से वो राजी मगर
फ़िरिश्ते हैं नूरानी व बे गुनाह
वो जिब्रील लाते थे हुक्मे इलाह
किताबें हैं जितनी खुदा की तमाम
वो सब हक़ हैं उनमें नहीं कुछ कलाम
बुज़ुर्ग और हक़ गरचि हैं अंबिया
मगर सबके सरदार हैं मुस्तफा
मुहम्मद नबी साहिबे मोजिज़ात
अलैहिस्लामो अलैहिस्सलात
दिया हक़ ने उनको वो कुर्आने पाक
कि लारैब फ़ीह जिसकी है शाने पाक
ख़लीफ़ा भी तरतीब से चार हैं
वो हैं पेशवा और सरदार हैं
अबूबक्रो फारूक़ उस्मां अली
ऐ थे हमदमो जाँ नशीने नबी
जो अस्हाबो औलाद व अज़वाज हैं
वो हैं पेशवा और सरताज़ हैं
सुवाले नकीरैन हैं गोर में
जियेगा हर एक हश्र के शोर में
लिया जाएगा फिर हिसाबो किताब
ब क़द्रे अमल है अज़ाबो सवाब
बजा औलिया की करामात है
नुजूमी की झूठी हर एक बात है

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

लीबिया में लागू होगी इस्लामी शरीअत- लीबिया एक इस्लामी मुल्क बनने की राह पर चल पड़ा है। देश के तानाशाह मुअम्मर क़ज़्ज़ाफी के खात्मे के बाद एक बड़ा फैसला लेते हुए राष्ट्रीय अंतरिम परिषद (एनटीसी) के नेता मुस्तफा अब्दुल जलील ने कहा है कि देश में इस्लामी कानून लागू किया जाएगा। इसके पूर्व औपचारिक रूप से लीबिया को स्वतंत्र घोषित किया गया था।

जलील ने साफ किया कि देश में उन सभी कानूनों को समाप्त कर दिया जाएगा जो इस्लामी कानूनों के अनुरूप नहीं हैं। इस संदर्भ में जलील ने क़ज़्ज़ाफी के समय में निकाह के लिए बनाए गए एक कानून का उदाहरण भी दिया, जिसके जरिए एक से ज़्यादा विवाह करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था।

जलील ने एक महीने के अन्दर सरकार बनाने और एक साल या 20 महीने के अन्दर देश में आम चुनाव कराने का भी वादा किया है। इस बीच अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने लीबिया की आजादी की घोषणा का स्वागत करते हुए इसे 'वादों के एक नए युग का सूत्रपात' करार दिया है। व्हाइट हाउस से जारी वक्तव्य के मुताबिक ओबामा ने लीबिया से सुलह की प्रक्रिया शुरु करने का आग्रह किया है। ओबामा ने वक्तव्य जारी कर कहा, मैं अमेरिकी जनता की ओर से लीबियाई जनता को उनके देश की आजादी की ऐतिहासिक घोषणा पर बधाई देता हूं। चार दशकों की क्रूर तानाशाही और आठ महीने के घातक संघर्ष के बाद लीबिया के लोग अब अपनी आजादी का जश्न मना सकते हैं। उन्होंने लीबियाई अधिकारियों से मानवाधिकारों का सम्मान करने की उनकी प्रतिबद्धता पर कायम रहने, एक राष्ट्रीय सुलह प्रक्रिया शुरू करने, हथियारों और खतरनाक सामग्री से सुरक्षा और विभिन्न सशस्त्र समूहों को एकीकृत नागरिक नेतृत्व के तहत लाने का आग्रह किया।

मदद को तैयार बांग्लादेश-

बांग्लादेश सरकार ने नए लीबिया के पुनर्निर्माण में मदद करने के लिए हज़ारों मजदूरों को वहां भेजने की इच्छा जाहिर की है। बांग्लादेश के कल्याण एवं प्रवासी रोजगार मंत्री खांडकेर मुशर्रफ हुसैन ने बताया, हम लीबिया की अंतरिम परिषद के अधिकारियों के साथ पहले से ही संपर्क में हैं। लीबिया के पुनर्निर्माण के लिए ज्यादा से ज्यादा लोगों की जरूरत है और बांग्लादेश वहां हजारों श्रमिकों को भेजने में सक्षम है। जब क़ज़्ज़ाफी के खिलाफ विद्रोह शुरू हुआ, उस वक्त लीबिया में 60 हजार बांग्लादेशी मौजूद थे।

तेल भण्डारों का क्या होगा भविष्य?

एनटीसी के सामने सबसे बड़ी चुनौती तेल उद्योग को फिर से पटरी पर लाना है जो क़ज़्ज़ाफी के खिलाफ विद्रोह के दौरान बुरी तरह प्रभावित हुआ है। विश्व में कच्चे तेल का यह 9वां सबसे बड़ा भण्डार है। जनवरी 2011 के आंकड़े के अनुसार लीबिया के पास प्रमाणिक रूप से 46.4 अरब बैरल सुरक्षित भंडार है।

❑❑